DHYEYA IAS
most trusted since 2003

ध्येय IAS
most trusted since 2003

योजना MONTHLY GIST

अगस्त 2022

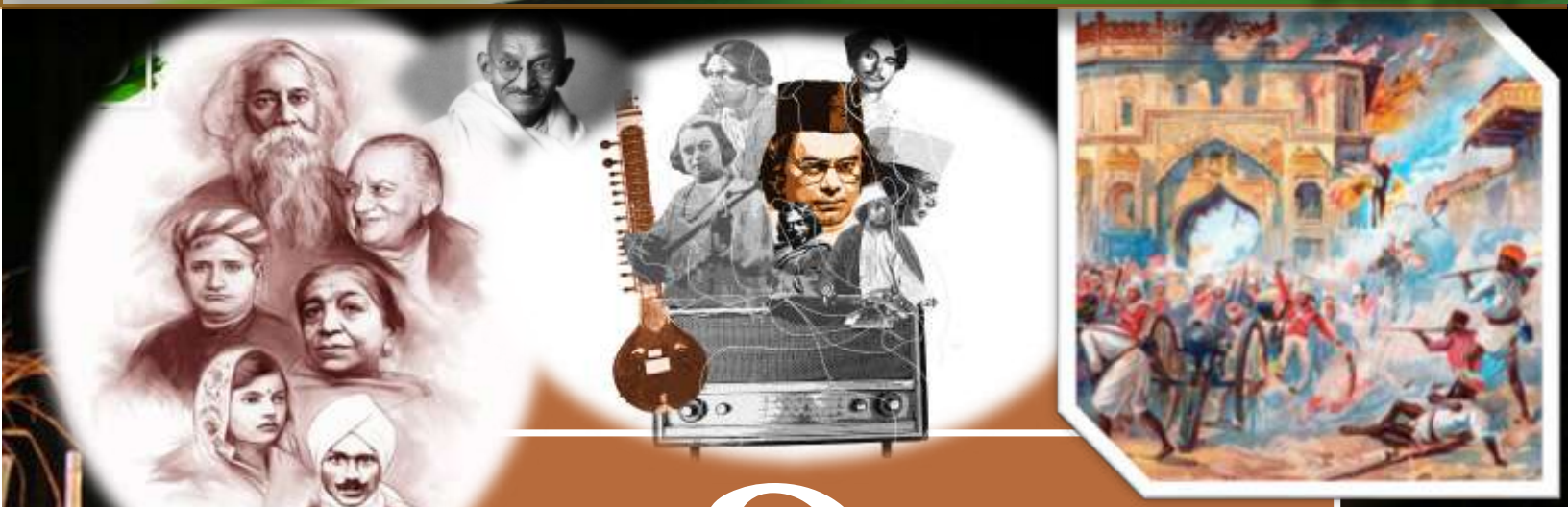

साहित्य और विभाजन

DHYEYA IAS
most trusted since 2003

www.DhyeyaIAS.com

Preface

प्रिय विद्यार्थियों,

सिविल सेवा परीक्षा भारत की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षा है ,जिसमें सफल होने पर आपको देश के सर्वोच्च पदों की जिम्मेदारी का निर्वहन करना होता है। इन सर्वोच्च पदों पर बैठे लोग नीति निर्माण एवं क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इसीकारण संघ लोक सेवा आयोग अपनी परीक्षा प्रणाली के माध्यम से ऐसे अभ्यर्थियों का चयन करना चाहता है जो तार्किक, प्रगतिशील, संवेदनशील होने के साथ साथ संपूर्ण वैश्विक जगत में आ रहे परिवर्तनों के प्रति जागरूक हों। संघ लोक सेवा आयोग ने इस जागरूकता का परीक्षण करने के लिए विगत 7 वर्षों में करंट अफेयर्स के प्रश्नों की संख्या को बढ़ा दिया है। करंट अफेयर्स के प्रश्नों की संख्या में बढ़ोत्तरी प्रारंभिक परीक्षा के साथ मुख्य परीक्षा में भी की गई है। प्रारंभिक परीक्षा में हर साल औसतन 13-14 प्रश्न करंट अफेयर्स से पूछे जा रहे हैं। वर्ष 2016 में तो लगभग 40 प्रश्न सिर्फ करंट अफेयर्स से पूछ लिए गए थे।

वर्ष 2013 में मुख्य परीक्षा के पैटर्न में परिवर्तन किया गया जिसके बाद मुख्य परीक्षा में करंट अफेयर्स सबसे निर्णायक सेगमेंट के रूप में हमारे सामने आया है। मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र- 2 और सामान्य अधययन प्रश्न पत्र- 3 के अधिकांश प्रश्नों में आप करंट अफेयर्स के निर्णायक रोल को देख सकते हैं। इन दोनों प्रश्न पत्रों में अच्छा स्कोर करने की प्राथमिक शर्त करंट अफेयर्स पर आपकी अच्छी पकड़ होना बन गया है। सामान्य अधययन प्रष्ठन पत्र 1 और 4 के कुछ ट्रेडिशनल प्रश्नों में भी आप करंट अफेयर्स का रोल को देख सकते हैं। निबंध का पेपर भी हमारे लिए बहुत स्कोरिंग होता है। करंट अफेयर्स के कई मुद्दों को निबंध में डायरेक्ट पूछ लिया जाता है। इस तरह मुख्य परीक्षा में करंट अफेयर्स की निर्णायक भूमिकास्पष्ट हो जाती है। अगर आप हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम के रिजल्ट का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे तो आपको पता चलेगा कि सामान्य अध्ययन में अंग्रेजी माध्यम के अभ्यर्थियों के नम्बर हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों की तुलना में ज्यादा आते हैं, इसके पीछे एक प्रमुख कारण यह है कि उनका करंट अफेयर्स पर कमांड हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों से बेहतर होता है। इससे साफ हो जाता है कि करंट अफेयर्स न सिर्फ सेलेक्शन के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि रेंक निर्धारण में भी इसकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मुख्य परीक्षा के बाद अभ्यर्थी को साक्षात्कार (इंटरव्यू) फेस करना होता है। इंटरव्यू में सामान्यत: करंट अफेयर्स के मुद्दों पर प्रश्न पूछे ही जाते हैं। कई विद्यार्थियों का तो 80 तक इंटरव्यू करंट अफेयर्स के परिधि में ही पूरा हो जाता है। निष्कर्ष के रूप यह कहा जा सकता है कि इस समय अगर आपको सिविल सेवा परीक्षा में सफलता प्राप्त करना है तो आप करंट अफेयर्स नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं।

करंट अफेयर्स के इस महत्व को देखते हुए ही हमारा संस्थान समय-समय पर करंट अफेयर्स की क्लास आयोजित करता आया है। हमारी मैगजीन जिसका नाम 'परफेक्ट 7' है वह करंट अफेयर्स के लिए अपने आप में 'गागर में सागर' का काम करती है इसीकारण उसका नाम 'परफेक्ट 7' रखा गया है। ध्येय संस्थान हमेशा से विद्यार्थी हितों के अनुकूल रचनात्मक कदम उठाता आया है, इसी क्रम में ध्येय **IAS** ने 'योजना' पत्रिका का 'मंथली जिस्ट' निकालने का निर्णय लिया है। यह एक ऐसी सरकारी पत्रिका है जिससे न सिर्फ सरकारी योजनाओं की स्थिति का पता चलता है बल्कि हमारे चारों ओर जो घटित हो रहा है उसके विषय में शानदार लेख हमें देखने को मिलते हैं। प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा के प्रश्नों का एनालिसिस करने से आपको पता चलेगा कि बहुत से प्रश्न इस पत्रिका में कवर किये गये टॉपिक से डायरेक्ट पूछे जाते रहे हैं। इस पत्रिका में लिखे गये लेख न सिर्फ गुणवत्ता की दृष्टि से बहुत अच्छे होतें हैं बल्कि सरकारी आंकड़ो के लिए भी यह प्राथमिक सोर्स के रूप में यूज किये जाते हैं। इस पत्रिका की परीक्षा उपयोगिता को देखते हुए ध्येय **IAS** ने इसका जिस्ट बनाने का निर्णय लिया है। इस जिस्ट से आप न सिर्फ कम समय में पत्रिका में लिखे गए मुद्दों से परिचित हो पाएंगे बल्कि इसमें ध्येय **IAS** टीम के द्वारा जोड़े गए इनपुट्स का भी लाभ उठा पाएंगे। इसके अलावा हम पत्रिका में कवर किये गए मुद्दों का बैकग्राउंड आपको बताने का प्रयास करेंगे जिससे उस टॉपिक पर आपकी पूरी कमांड बन सके। जिस्ट में कवर किये गए टॉपिक से किस प्रकार के प्रश्न पूछे जा चुके हैं, उन्हें भी आपके सामने रखा जाएगा। इससे आपको यह पता चल पायेगा कि संबंधित टॉपिक से किस प्रकार के प्रश्न पूछे जाते रहें हैं। इन प्रश्नों को देखकर आप अनुमान लगा पाएंगे कि किसी टॉपिक को हमें कैसे तैयार करना है। इसके अलावा जिस्ट में कवर किये गए टॉपिक पर हम आपको कुछ मुख्य परीक्षा के प्रश्न और उनके मॉडल आंसर भी देंगे जिससे आप टॉपिक पर अपनी पकड़ को चेक कर सकें। हमने इस जिस्ट को सारगर्भित और रोचक बनाने का अपनी तरफ से प्रयास किया है, जिसमें सुधार की कई गुंजाइशें हो सकती हैं। आप सबके सुझाव आमंत्रित हैं।

प्रबंधक
ध्येय आईएएस

INDEX

01	भारतीय ध्वज संहिता 2002	01-02
02	काजी नजरूल इस्लाम	02-05
03	प्रतिबंधित प्रकाशन	05-07
04	मध्य भारत में स्वतंत्रता आंदोलन	07-10
05	गुजराती साहित्य पर गांधी का प्रभाव	10-11
06	उर्दू अदब की भूमिका	11-13
07	समकालीन स्त्री लेखन	13-15
08	स्वतंत्रता संघर्ष : बांग्ला रंगमंच	15-17
09	स्वाधीनता आंदोलन और राष्ट्रवाद	17-20
10	संस्कृत सेवियों का स्वतंत्रता में योगदान	21-24
11	हिन्दी साहित्य की चेतना	24-27
12	पूर्वोत्तर भारत के आजादी के तराने	28-30
13	विभाजन साहित्य	30-31

1. भारतीय ध्वज संहिता 2002

- भारत का राष्ट्रीय ध्वज देश के लोगों की आकांक्षाओं और उम्मीदों को दर्शाता है। यह हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है। राष्ट्रीय ध्वज के लिए प्रत्येक भारतीय के मन में प्यार और सम्मान का भाव है।
- भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को फहराने और इसके इस्तेमाल करने के लिए राष्ट्रीय गौरव का अपमान निवारण अधिनियम, 1971 और भारत ध्वज संहिता में दिशा-निर्देश जारी किए गए है। भारतीय ध्वज संहिता को 3 हिस्सों में बांटा गया है। पहले हिस्से में राष्ट्रीय ध्वज के बारे में सामान्य जानकारी दी गई है। दूसरे हिस्से में सरकारी, निजी और शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रीय ध्वज के इस्तेमाल से जुड़े नियमों का वर्णन हैं, वहीं इसके तीसरे हिस्से में केन्द्र एवं राज्य सरकारों तथा उनके विभिन्न संगठनों व एजेंसियों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज को फहराए जाने से संबंधित नियमों के बारे में जानकारी दी गई है।

चर्चा में क्यों ?

- एक आदेश के तहत भारतीय ध्वज संहिता 2002 में 30 दिसंबर 2021 को संशोधन किया गया।

- आजादी के 75वें वर्षगांठ पर आजादी के अमृत महोत्सव के मौके पर सरकार द्वारा हर-घर तिरंगा अभियान चलाया जा रहा है।

भारतीय ध्वज संहिता की प्रमुख बातें

- नए आदेश के मुताबिक अब पॉलिएस्टर या मशीन से बने झंडे के इस्तेमाल की भी अनुमति होगी।

- अब राष्ट्रीय ध्वज हाथ या मशीन से बने होंगें तथा इसका कपड़ा सूती, पॉलिएस्टर, ऊन, सिल्क अथवा खादी का हो सकता है।
- कोई भी सरकारी, निजी या शैक्षणिक संगठन हर दिन व अलग-अलग अवसरों पर तय दिशा-निर्देशों व सम्मान के साथ झंडा फहरा सकता है।
- राष्ट्रीय ध्वज का आकार बड़ा या छोटा हो सकता है, जिसमें लंबाई व चौड़ाई का अनुपात 3:2 होना अनिवार्य है, साथ ही इसकी आकृति आयताकार होगी।

- राष्ट्रीय ध्वज में तीन रंगों की पट्टिका होगी, जिसकी लंबाई व चौड़ाई का अनुपात बराबर होगा।
- सबसे ऊपर केसरिया रंग होगा, बीच में सफेद व सबसे नीचे हरे रंग की पट्टिका होगी।
- सफेद रंग वाली पट्टिका के बीच में नीले रंग में अशोक चक्र होगा, जिसमें तीलियों की संख्या 24 होगी।
- अशोक चक्र अच्छी तरह से छपा होना चाहिए, जिससे यह ध्वज में स्पष्टत: नजर आए।
- अगर ध्वज खुले में फहराया जा रहा है तो यथा संभव इसे सूर्योदय से सूर्यास्त तक रखा जाना चाहिए (यदि मौसम खराब हो फिर भी)।
- राष्ट्रीय ध्वज को हमेशा सम्मान के साथ फहराया जाना चाहिए तथा इसके लिए खास जगह का चुनाव किया जाना चाहिए।
- अगर ध्वज में किसी भी प्रकार की त्रुटि है तो इसे नहीं फहराया जाना चाहिए।
- ध्वज संहिता के भाग IX में शामिल पदाधिकारियों यथा राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल आदि के वाहनों के अलावा किसी भी अन्य गाड़ी पर ध्वज नहीं फहराया जाना चाहिए।
- राष्ट्रीय ध्वज के अगल-बगल किसी भी अन्य झंडे की ऊँचाई राष्ट्रीय ध्वज से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

हर-घर तिरंगा अभियान

- आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर सरकार द्वारा 'हर घर तिरंगा' कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सभी देशवासियों को अपने घर पर तिरंगा फहराये जाने के लिए प्रेरित किया जाना है।

- आजादी के 75वें सालगिरह पर ध्वज को सामूहिक तौर पर घर में लाने से न सिर्फ तिरंगे के साथ निजी जुड़ाव होगा, बल्कि राष्ट्र निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूती मिलेगी। केन्द्र सरकार की इस पहल का मकसद लोगों के दिलों में देश-भक्ति की भावना का संचार करना और राष्ट्रीय ध्वज को लेकर जागरूकता फैलाना है। इस कार्यक्रम के तहत भारत भर में लगभग 24 करोड़ तिरंगा झंडा फहराये जाने का अनुमान है।

2. काजी नजरूल इस्लाम

- राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन अपने नए दौर में एक सामाजिक तौर पर संवेदनशील अभियान में तब्दील हो गया। इस दौरान सिर्फ ब्रिटिश शासन के खिलाफ ही नहीं, बल्कि गरीबों के दमन, महिलाओं की दासता और शोषणों के खिलाफ भी प्रदर्शन हुए। सामाजिक और राजनीतिक उत्थान के प्रभावी माध्यम के रूप में युवाओं के महत्व में इजाफा हुआ। ऐसा माना जाने लगा कि विद्रोही, ओजस्वी, स्वतंत्रता -प्रिय, बलिदानी व मृत्यु से बेपरवाह युवा वर्ग सभी राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय, सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक समस्याओं को हल करने में सक्षम हैं।

नजरूल इस्लाम

शुरूआती जीवन

- नजरूल का जन्म 1899 में दक्षिण बंगाल के वर्धमान जिले के चुसलिया गांव के एक गरीब परिवार में हुआ।

- इनके बचपन का नाम दु:खु मियाँ था।
- प्रथम विश्व-युद्ध के दौरान नजरूल शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, लेकिन बचपन से साहसी प्रवृत्ति के नजरूल पढ़ाई छोड़कर ब्रिटिश सेना के 49वीं बंगाल बटालियन में हवलदार के रूप में शामिल हो गए।
- वास्तव में भारतीय युवा-वर्ग की एक बड़ी संख्या इस महायुद्ध में भाग ले रही थी, क्योंकि वे इसे देशभक्ति का कार्य मानते थे। इनका मानना था कि युद्ध के माध्यम से वे दूसरों के संसाधनों के सहारे युद्ध-कौशल प्राप्त कर रहे हैं।

- नजरूल का भी यही मानना था कि युद्ध-प्रशिक्षण स्वतंत्रता आंदोलन में काम आएगा।

कवित्व/साहित्यिक जीवन

- नजरूल इस्लाम कालांतर में राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान अपनी कवित्व विशिष्टता के कारण स्वतंत्रता आंदोलन के महत्वपूर्ण प्रतीक बन गए थे।
- नजरूल द्वारा युद्ध काल (1917) में रचित कहानी 'व्यथार दान' (दु:ख का उपहार) से पता चलता है कि प्रथम विश्वयुद्ध ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को अंतर्राष्ट्रीय रूप प्रदान किया।

- इनका कहना था कि युद्ध ने भारत में देशभक्ति की भावना को मजबूत किया साथ ही एकता के भावना का प्रसार किया।
- 'व्यथार दान' दो भारतीय सैनिकों की कहानी है, जो सोवियत संघ के 'लाल सेना' में शामिल हो जाते हैं। इन सैनिकों

को इस बात पर गर्व था कि वे एक परोपकारी कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं।

- वास्तव में पहले विश्व युद्ध के बाद के वर्षों में विश्व के अनेक हिस्सों में उप. निवेशवाद विरोधी आंदोलन हुए, जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद तार्किक प्रगति की।
- नजरूल इस्लाम तुर्की के कमाल पाशा से अत्यधिक प्रभावित हुए, जिन्होंनें पहले विश्वयुद्ध के बाद कई तरह के सुधारवादी आंदोलन को प्रोत्साहित किया, जिसमें युवा तातर और युवा अफगान शामिल थे।

- 1920 में जब 49 वीं बटालियन को भंग कर दिया गया तब नजरूल अपने मित्र मुजफ्फर अहमद, जो कम्यूनिस्ट विचारधारा के व्यक्ति थे, के साथ लेखन कार्य करने लगे।
- दोनों ने मिलकर ब्रिटिश विरोधी मुखर 'नवयुग' का प्रकाशन किया, जिसे कृषक पार्टी द्वारा अपने मुख्य पत्र के रूप में इस्तेमाल किया गया।
- नजरूल इस्लाम ने गांधी द्वारा शुरू किए गए असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया।

- दरअसल वे इस दौरान गांधी के अहिंसक सत्याग्रह का समर्थन करने के साथ-साथ विद्रोही शब्दावली तैयार कर रहे थे, इसकी मिसाल थी इनके द्वारा रचित गीत 'भांगार गान ।'
- 'भांगार गान' की रचना जनवरी 1922 में की गई, जिसमें कवि नजरूल युवा शिव (भगवान) से विनाश की लीला रचने का आह्वान करते हैं।
- इसी माह इनकी एक लोकप्रिय कविता 'विद्रोही' प्रकाशित हुई, जो युवा विद्रोहियों के इर्द-गिर्द केंद्रित थी।
- इस लंबी कविता में राष्ट्रीय आंदोलन का प्रत्यक्षत: वर्णन तो नहीं है, बावजूद इसके 'विद्रोही' द्वारा पीड़ितों के मदद करने का संकल्प लिया जाता है।

- यह कविता युवाओं को विनाशकारी विद्रोह के जरिए मानवता के लिए लाभदायक रचनात्मक कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।
- विद्रोह की भावना वाली इस गीत ने राष्ट्रीय आंदोलन में जबर्दस्त ऊर्जा का संचार किया।
- इस कविता ने देशभर में सनसनी मचा दी और नजरूल इस्लाम विद्रोही कवि के रूप में प्रसिद्ध हो गए।

- इनकी साप्ताहिक पत्रिका 'धूमकेतु' ने असहयोग आंदोलन के बाद बंगाल का राजनैतिक मार्ग दर्शन किया।
- इस पत्रिका को बेचैन और विद्रोही युवाओं का विजय ध्वज माना गया।
- 1920 के दशक में नजरूल राष्ट्रवाद के पुनरूत्थान के जरिया बन गये।
- क्रांतिकारी संगठन इनके धूमकेतु से अत्यंत प्रभावित थे।
- जुगांतर पार्टी ने इसे अपना मुख्य पत्र बना लिया।
- चटगांव शास्त्रागार का हमला (सूर्य सेन के नेतृत्व में) इस दौर की उग्र राष्ट्रवाद की चरम परिणति थी। इस कांड के बाद बंगाल के प्रशासनिक राइटर्स बिल्डिंग पर हमले के साथ-साथ कई अन्य छिट-पुट घटनाएं भी हुई।

- ऐसा कहा जाता है कि नजरूल 'धूमकेतु' का संपादकीय खून से लिखा करते थे।
- इन्होंने धूमकेतु पत्रिका के लिए कई कविताएं भी लिखी, जिसमें से एक कविता में नजरूल माँ दुर्गा से मूर्त रूप धारण कर आक्रांताओं का सर्वनाश करने की प्रार्थना करते हैं।

- नजरूल को इस कविता के लिए जनवरी 1923 में गिरफ्तार कर लिया गया और देशद्रोह के आरोप में साल भर की कठोर कारावास की सजा सुनाई गई।
- नजरूल ने कैदी जीवन के दौरान राजनीतिक बंदियों के साथ जेल अधि कारियों के दुर्व्यवहार के विरोध में भूख हड़ताल शूरू कर दिया था।
- नजरूल के भूख हड़ताल से समाज में व्यापक चिंता फैल गई, जिसके कारण

इनके समर्थन में विरोध प्रदर्शन शुरू किए गए।

- टैगोर इनके भूख-हड़ताल से इतने चिंतित हुए कि इन्होंने तार भेजकर इनसे भूख-हड़ताल खत्म करने की मांग की।
- टैगोर ने अपनी एक संगीत नाटक 'बसंत' को नजरूल इस्लाम को समर्पित किया।

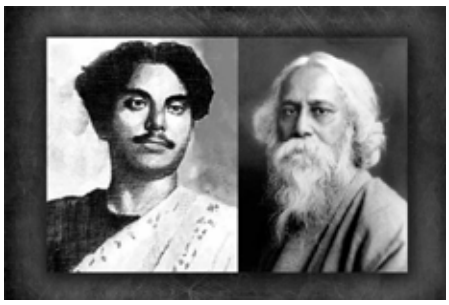

- नजरूल ने दिसंबर 1925 में शुरू किए गए बंगाल के पहले समाजवादी लेबर संगठन स्वराज पार्टी के प्रकाशन 'लांगल' (हल) का संपादन किया।
- 1926 में इसका नाम परिवर्तित कर 'गणवाणी' कर दिया गया। इन दोनों पत्रिकओं में नजरूल ने गीतों द्वारा गरीबों के अधिकार छीने जाने का विरोध किया। साथ ही अपने गीतों, कविताओं के माध्यम से महिलाओं की दासता, पाखंडपन, भ्रष्टाचार और सामाजिक-आर्थिक असमानता और शोषण की निंदा की।
- अग्निवीणा, प्रलय शिक्षा, चंद्र बिंदु आदि प्रत्येक कविता संग्रह के माध्यम से नजरूल ने समाज में विद्रोह की भावना को प्रेरित किया।

- नजरूल के सभी रचनाओं पर ब्रिटिश सरकार की नजर रहती थी तथा अंग्रेजी सरकार ने नजरूल के कई प्रकाशनों को प्रतिबंधित भी किया था।
- नजरूल ने युवाओं का महिमा मंडन भी किया, साथ ही स्वयं के सैन्य-अभियानों, भौगोलिक खोजों व पर्वतारोहण का भी जिक्र किया।
- 'कल्लोल' में प्रकाशित नजरूल की प्रेम कविताएं 'माधवी-प्रोलाप' व 'अनामिका' ने समाज में सनसनी फैला दी। यह पत्रिका तड़पते और तात्कालीन सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह करते युवाओं की आवाज बन गई।

हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक

- असहयोग आंदोलन के दौरान हिंदु-मुस्लिम एकता चरम पर थी लेकिन धीरे-धीरे दोनों समुदाय के बीच दूरी बढ़ती गई।
- नजरूल ने सांप्रादायिक घृणा के खिलाफ संघर्ष को अपना प्रमुख उद्देश्य बनाया।
- चूंकि वे बचपन से ही हिंदू-मुस्लिम की समन्वित संस्कृति के बीच पले-बढ़े थे, इसलिए इन्होनें अपने जीवन-काल में अनेक हिंदू मित्र बनाए।

- वे हर किस्म के रूढ़िवादी-धार्मिकता से अलग थे, शायद यही वजह थी कि उन्होंने एक हिंदू महिला से शादी की थी।
- इन्होंने कट्टरता व अंधविश्वासों के लिए सभी धर्मो की आलोचना की।
- इनकी कविताओं में हिंदू पौराणिक कथाओं व इस्लामिक इतिहास का समन्वय था।
- इन्होंने रूद्र व ईशान जैसे देवताओं का जिक्र विध्वंस के प्रतीक के रूप में किया न कि हिंदू देवताओं के रूप में ।
- तुर्की के कमालपाशा सहित इस्लामी जगत के अन्य क्रांतिकारियों की काफी सराहना की क्योंकि इनका मानना था कि ऐसे नेताओं ने गतिरूद्धता के मामले में जागरूकता फैलाने का काम किया।
- नजरूल एक कविता में कहते हैं कि हम हिंदू व मुसलमान एक ही डाली के दो फूल हैं। वहीं एक अन्य कविता, जो उन्होंने 1926 में कांग्रेस के प्रांतीय सम्मेलन के दौरान गाया था, का तात्पर्य था- कौन पूछता है कि वे हिंदू हैं या मुसलमान ? ओ खेवनहार, उनसे कहो, डूबने वाले सभी इंसान हैं- मेरी माँ की संतानें।

- पुत्र बुरावल के निधन के परिणाम स्वरूप उनके जीवन में आध्यात्मिकता का प्रवेश हुआ, जिससे उनका विद्रोही तेवर नरम हो गया।
- इनकी आध्यात्मिकता में हिंदू योगी और तांत्रिक पंथों तथा इस्लामी सूफीवाद का समन्वय था।
- इस दौर में उन्होंने इस्लामी गीतों के अलावा माँ काली की भक्ति में श्यामा संगीत की रचना भी की और इनकी धुनें भी बनाई।

- 1939 में नजरूल की पत्नी को लकवा मार गया, जिसके सदमें से वे कभी नहीं उभर सके और निधन (1976) तक शांत ही रहे।

निष्कर्ष

- कुल मिलाकर इन रचनाओं के दो पहलू थे- विध्वंसक व रचनात्मक। इन रचनाओं में राष्ट्रीय आंदोलन में आजादी की भावना के साथ ही रूढ़िवादी और अवरोधक विचारों के प्रति भी नजरूल की बेचैनी स्पष्ट थी। इसके साथ ही इसमें अन्याय और असमानता मुक्त तथा प्रेम व स्वतंत्रता से परिपूर्ण विश्व की कल्पना भी समाहित थी।

- काजी नजरूल अपने साहित्यिक रचनाओं से उस दौर में विचारों के प्रमुख वाहक बन गये। इनकी कविताओं ने बंगाली युवा सहित देश भर के युवा वर्ग को प्रभावित किया। इनकी आवाज में भावुकता व भाषा में चमक थी। इनके समकालीन इटली के बॉयलोजिस्ट गैलवानी की तरह ही नजरूल ने बंगाल में मृत मेंढ़क की तरह पड़ी युवा शक्ति को पुनर्जीवित किया।
- इस बॉयलोजिस्ट ने मृत मेंढ़कों की टांग में विद्युत प्रवाहित करने पर उनकी मांसपेशियों के फड़फड़ाने के संबंध में खोज की थी।

3. प्रतिबंधित प्रकाशन

- विश्व भर में दमनकारियों ने विभिन्न कालों में उनके द्वारा स्थापित प्रक्रिया के विरोधी भावनाओं को जागृत करने वाले तत्वों को दबाने का प्रयास किया है । हालांकि दमनात्मक कार्रवाई के बावजूद स्वतंत्र विचारधारा विकसित होती ही रही। वास्तव में अगर सुकरात व गैलिलियो, ब्रूनों जैसे विचारकों ने जान की बाजी लगाकर दुनिया को नयी विचारधारा प्रदान नहीं की होती तो संभवत: वर्तमान युग का स्वरूप ऐसा नहीं होता ।
- भारतीय गुलामी के दौर में भी अंग्रेजों के द्वारा कई तरह के दमनात्मक कार्रवाई की गई, जिसमें साहित्यों, कविताओं व अन्य कथा-संग्रहों पर भी कई तरह के प्रतिबंध लगाए गए। वास्तव में साहित्य का यह रूप जनता को विदेशी शासन से मुक्त होने के लिए प्रयास करने का आह्वान करती थी, साथ ही क्रांतिकारी विचारों का सूत्रपात करने में भी योगदान देती थी।

पत्रकारिता व अंग्रेजी प्रतिबंध

- 29 जनवरी 1780 को जेम्स ऑगस्तस हिक्की के संपादन में एशिया की प्रथम सामाचार पत्रिका 'बंगाल गजट' का प्रकाशन, वारेन हेस्टिंग द्वारा इस पत्रिका पर वर्ष 1782 में प्रतिबंध

- ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा विरोधी स्वर को दबाने के लिए कई कानून, जिसमें 1799 में गवर्नर-जनरल लार्ड वेलेजली द्वारा पहला प्रेस सेंसरशिप एक्ट लागू।
- वर्ष 1818 में रेग्यूलेशन एक्ट III आया, जिसके तहत लाला लाजपत राय को मांडले जेल भेजा गया।

- इसी कड़ी में वर्ष 1823 में लाइसेंसिंग रेग्यूलेशन एक्ट आया व 1835 में चार्ल्स मेटकॉफ एक्ट आया।
- वर्ष 1857 में लाइसेंसिंग एक्ट के द्वारा भी प्रतिबंध लगाने की कोशिश
- 1858 में इसी एक्ट में नया अनुच्छेद 153-**A** जोड़ा गया। इसी एक्ट में पुन: 295 **A** जोड़ा गया।
- इनमें से अधिकांश कानून ब्रिटिश ने अपने देश में खत्म कर दिया था लेकिन भारत में विरोधी स्वर को दबाने के लिए लगातार इन एक्ट का प्रयोग।
- वर्ष 1898 में सरकारी गोपनीयता कानून, बाद में डाकघर कानून तथा भारतीय सीमा शुल्क कानून के तहत पुस्तकों व पत्रिकाओं के प्रकाशन पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश।

- 1910 में भारतीय ब्रेन एक्ट वृहत स्तर पर लागू ।

प्रतिबंधों से संबंधित कुछ आंकड़े

- जनरल बैरियर के अनुसार, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अभिलेखागार में अंग्रेजी सहित 9 भारतीय भाषाओं के कुल 1224 प्रतिबंधित प्रकाशन हैं।
- ब्रिटिश संग्रहालय में 1569 व इंडियन ऑफिस लाइब्रेरी में भी कई प्रतिबंधित प्रकाशन रखे हैं।

- 2664 प्रतिबंधित प्रकाशन ब्रिटिश लाइब्रेरी में रखे गये हैं।
- कई प्रकाशनों के 2 या अधिक प्रतियाँ भी शामिल हो सकते हैं क्योंकि अंग्रेजों द्वारा कई प्रकाशनों के प्रतियाँ दिल्ली व लंदन में अलग-अलग रखे जाते थे।
- प्रतिबंधित प्रकाशनों में प्रकाशनों के शीर्षक से पता चलता है कि इनका संबंध मुख्यतः गांधी, भगत सिंह, आजादी, इंकलाब, देशभक्ति, गीत-तराने, खूनी, फांसी, वतन, जुल्म आदि से संबंधित हैं।
- इन रिकार्डों के कुछ स्रोत पाकिस्तान के लाहौर अभिलेखागार, कैंब्रिज विश्वविद्यालय, शिकागो विश्वविद्यालय, कैलिफोर्निया के वर्कले विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क लाइब्रेरी में भी सुरक्षित रखे गये हैं।

- भारत के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा इन प्रतिबंधित प्रकाशनों से चुनी हुई कविताओं का पहली बार वर्ष 1987 व फिर 1998 में प्रकाशन किया गया। 2021 में आजादी के 75वीं वर्षगांठ पर इन दोनों प्रकाशनों को नए आकर्षक रूप में पुनः प्रकाशित किया गया, जिसमें कविताओं से संबंधित कलात्मक चित्र भी जोड़े गए।

इनमें से एक प्रकाशन का शीर्षक 'आजादी के लड़ाई के जब्त शुदा तराने' व दूसरे प्रकाशन का शीर्षक 'जब्तशुदा गीत:-आजादी व एकता के तराने' हैं।

जब्तशुदा गीत: आजादी व एकता के तराने

इसका संपादन वर्ष 1987 में रामजन्म शर्मा द्वारा

- पुनः प्रकाशन वर्ष 2021 में
- कविताओं के साथ कलाकारों व संबद्ध चित्रों का भी वर्णन
- प्रकाशन के अनुसार हिन्दी की 264, उर्दू की 50, तमिल की 19, तेलगू की 10, पंजाबी-गुजराती की 22-22, सिंधी की 9, मराठी की 13, ओड़िया की 11, बांग्ला की 4 पुस्तक को किया गया था प्रतिबंधित ।
- इस कविता-संग्रह की लिपि देवनागरी
- कुल 59 कवियों में 41 का नाम ज्ञात व 18 अज्ञात

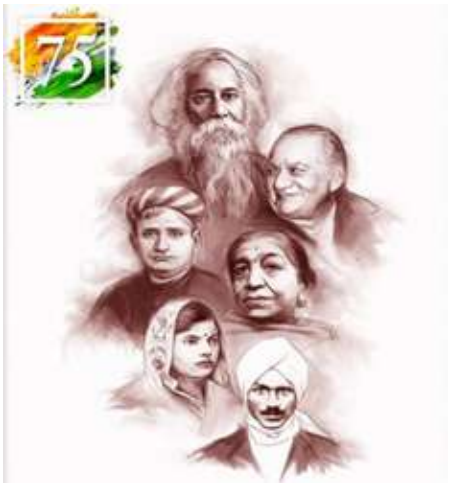

- इस संग्रह में टैगोर, इकबाल, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे प्रसिद्ध कवियों के कविताएं शामिल।

आजादी के लड़ाई के जब्त शुदा तराने

- 1998 में प्रथम प्रकाशन, पुनः 2021 में
- 100 ज्ञात व 12 अज्ञात कवियों के कविताओं का संग्रह

- मोहम्मद इकबाल की रचना 'सारे जहाँ से अच्छा' इस संग्रह का भाग
- सुभद्रा कुमारी चौहान की रचना 'झांसी की रानी' का नाम 'आजादी की देवी'
- माखनलाल चतुर्वेदी की रचना 'पुष्प की अभिलाषा' भी शामिल
- श्यामलाल गुप्त प्रसाद की रचना 'विजयी विश्व तिरंगा, झंडा ऊँचा रहे हमारा' भी इसी-संग्रह का भाग
- अमर शहीद बिस्मिल व अशफाक उल्ला खां जैसे महान कवियों के गीत भी इसी भाग का हिस्सा
- 'सरफरोशी की तमन्ना' जिसे रामप्रसाद बिस्मिल की रचना मानी जाती है लेकिन इसके वास्तविक रचयिता बिस्मिल अजीमाबादी हैं, भी इसमें शामिल

- अशफाक उल्ला खां की कविता 'वतन हमारा रहे आजाद व सलामत' भी इसमें शामिल

- टैगोर की 'भारत-प्रशस्ति' व कवि ज्योतिशंकर की कविता 'भारत न रह सकेगा हर्गिज गुलामखाना' भी इसी संग्रह का हिस्सा।
- हिन्दी कवि चकोर की रचना 'किसान' कविता संग्रह, कवि हमदम की रचना 'प्यारा हिंदुस्तान हमारा' व भारतीय-समर्थक ब्रिटिश कवि अर्नेस्ट जोंस की रचना 'भारत में विद्रोह' भी इसी संग्रह का हिस्सा।

इस संग्रह के अन्य कवि

- जांनिसार अख्तर, साहिर लुधियानवी, टीकाराम सुखन, सोहन लाल द्विवेदी, स्वामी नारायणनंद पंडित, सरहार जाफरी, बृजनारायण आदि।

- निम्न घटनाओं पर आधारित कविताएं भी हैं शामिल:-
- 1857 का स्वाधीनता संग्राम
- 1919 का जालियांवाला बाग हत्याकांड
- 1922 का चौरी-चौरा कांड

- शहीद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां की वीरगति
- काकोरी कांड व 1927 में क्रांतिकारियों को फांसी की घटना
- नौजवान भारत सभा व भगत सिंह
- हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन ऐसोसिएशन
- सांडर्स हत्याकांड व माइकल ओ डायर हत्याकांड

- 1929 में सेंट्रल एसेम्बली में बम-कांड
- 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन

4. मध्य भारत में स्वतंत्रता आंदोलन

- स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास की जब चर्चा होती है, प्राय: हम 1857 की क्रांति को ही शुरूआती बिंदु मानते हैं, लेकिन इतिहास गवाह है कि 1857 से पहले कई क्षेत्रीय क्रांतियाँ हुई हैं, जिनमें आदिवासी क्षेत्रों में हुए क्रांतियों का प्रमुख योगदान रहा है।

- 1857 से पहले अंग्रेजों के विरूद्ध आदिवासियों ने बार-बार विद्रोह किया था, जिसके कारण अंग्रेजों को इनके खिलाफ वर्चस्व हासिल करने में काफी कठिनाई हुई थी, साथ ही इन क्रांतियों ने क्रांतिकारी विचारधारा को हमेशा प्रेरणा देने का काम किया है। आंदोलन की इस कड़ी में हम छत्तीसगढ़ में 1857 से पूर्व हुए आंदोलनों की चर्चा करेंगे।

1857 से पूर्व छत्तीसगढ़ क्षेत्र के विद्रोह

1. हल्बा विद्रोह

- 1774-79 तक विद्रोह की समयावधि लंबी व हिंसक विद्रोह

- अंग्रेजों द्वारा जयपुर के राजा व बस्तर के राजा के छोटे भाई को अपने पक्ष में मिलाकर बस्तर के राजा पर 1774 में आक्रमण
- अजमेर सिंह (बस्तर के राजा) के सैन्य टुकड़ियों में हलवा आदिवासी प्रमुख रूप से शामिल
- हलवा आदिवासियों की सहायता से अजमेर सिंह की शुरूआती जीत
- 1779 में दरियादेव सिंह द्वारा धोखे से अजमेर सिंह की हत्या
- राजा की हत्या के बाद हलवा सैन्य समूह नेतृत्व विहीन
- दमन चक्र में हलवा आदिवासियों का बड़े पैमाने पर लक्षित नर-संहार
- अंग्रेजों के विरूद्ध होने वाला प्रथम विद्रोह, राजा अजमेर पहले शहीद

2. सरगुजा विद्रोह

- समयावधि 1792 ई.
- सरगुजा क्षेत्र पर कब्जे के लिए अंग्रेज व मराठा की सम्मिलित सेना का आक्रमण
- अजीत सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजों को

मुँहतोड़ जवाब
- युद्ध में अजीत सिंह शहीद

3. बस्तर का भोलापटनम विद्रोह
- समयावधि वर्ष 1795

राजा दरियादेव सिंह के नेतृत्व में गोंड जनजातियों का अंग्रेजों के खिलाफ
- गोंड की वीरता के सामने अंग्रेज पस्त
- अंग्रेज बस्तर पर कब्जा करने में असफल

4. परलकोट विद्रोह
- समयावधि 1824-25
- परलकोट बस्तर शासकों का मुख्यालय
- इस क्षेत्र में अंग्रेजों को रोकने के लिए गेंद सिंह के नेतृत्व में अबूझमाडिया आदिवासियों द्वारा विद्रोह

- अत्याधुनिक हथियारों के साथ अंग्रेजों का हमला
- 10 जनवरी 1825 को गेंद सिंह को सरे-आम फांसी

5. कोल विद्रोह
- समयाविधि 1831-32
- छोटानागपुर क्षेत्र में कोल आदिवासियों द्वारा विद्रोह

- आदिवासी समुदायों के भूमि को जबर्दस्ती हड़पने के कारण विद्रोह
- बड़ी मात्रा में अंग्रेजी सैनिकों के द्वारा प्रत्युत्तर
- कई आदिवासियों की हत्या

6. बड़गढ़ विद्रोह
- समयावधि 1833
- बड़गढ़ के राजा अजीत सिंह के नेतृत्व में रायगढ़ के आदिवासियों का विद्रोह
- अजीत सिंह के वीरगति प्राप्त होने से हिंसक विद्रोह की समाप्ति

7. तारापुर विद्रोह 1842
- तारापुर क्षेत्र का प्रशासक बस्तर के राजा भूपलदेव का भाई दलगंजन सिंह
- अंग्रेजों द्वारा टैक्स बढ़ाये जाने का दलगंजन द्वारा विरोध
- विद्रोह को दबाने के लिए नागपुर से पहुँची अंग्रेजी सेना
- दलगंजन सिंह के नेतृत्व में भीषण विद्रोह
- विद्रोह में दलगंजन सिंह की पराजय
- गिरफ्तारी के बाद जेल की सजा

8. दंतेवाड़ा विद्रोह
- नरबलि प्रथा को रोकने के अंग्रेजों के आदेश के विरूद्ध विद्रोह
- समयावधि 1842 ई.
- विद्रोह को दबाने के लिए नागपुर से आई अंग्रेजों की सेना
- आदिवासियों द्वारा अंग्रेजों को मुँहतोड़ जवाब
- भीषण दमन में आदिवासी परास्त
- विद्रोह की समाप्ति के बाद नरबलि प्रथा पर प्रतिबंध लागू
- उपरोक्त क्षेत्र में ब्रिटिश की स्थानीय सेना स्थापित

उपरोक्त विद्रोह के कारण:-
- अंग्रेजों द्वारा लगान वसूली के कठोर नियम
- परंपरागत सामाजिक-धार्मिक व्यवस्था को बदलने का प्रयास
- वन प्रबंधन से संबंधित कानून
- आदिवासियों की धरोहर जल, जंगल व जमीन पर अवैध कब्जा
- परंपरागत मदिरा बनाने पर प्रतिबंध
- वन-उपज के प्रयोग पर रोक

1857 की क्रांति के दौरान आदिवासी विद्रोह

1. सोनाखन का विद्रोह - 1857
- रायपुर के सोनाखन क्षेत्र में आदिवासी जमींदार नारायण सिंह के नेतृत्व में विद्रोह
- इस क्षेत्र में आए अकाल के कारण जमींदार द्वारा स्थानीय साहूकार के पास जमा किए गए धान को जनता में बंटवाना इस विद्रोह का प्रमुख कारण

- नारायण सिंह द्वारा स्थानीय ब्रिटिश पुलिस चौकी में इसकी पूर्व जानकारी
- साहूकार द्वारा ब्रिटिश थाने में डकैती

की रिपोर्ट दर्ज
- ब्रिटिश पुलिस द्वारा नारायण सिंह की गिरफ्तारी, रायपुर जेल में बंद
- रायपुर की देशी पैदल सेना की मदद से भागने मे सफल
- नारायण सिंह की पुन: गिरफ्तारी के लिए बड़ी संख्या में ब्रिटिश सैनिक द्वारा दमन चक्र
- कई संघर्ष के बाद नारायण सिंह गिरफ्तार
- 10 दिसंबर 1857 को नारायण सिंह को फांसी
- स्वतंत्र भारत में नारायण सिंह को वीर की उपाधि तथा 1857 की क्रांति का प्रथम शहीद घोषित

2. रायपुर में देशी पैदल सेना का विद्रोह- 1858
- नारायण सिंह के फांसी के बाद विरोध में देशी पैदल सेना द्वारा विद्रोह
- 18 जनवरी 1858 को विद्रोह की शुरूआत

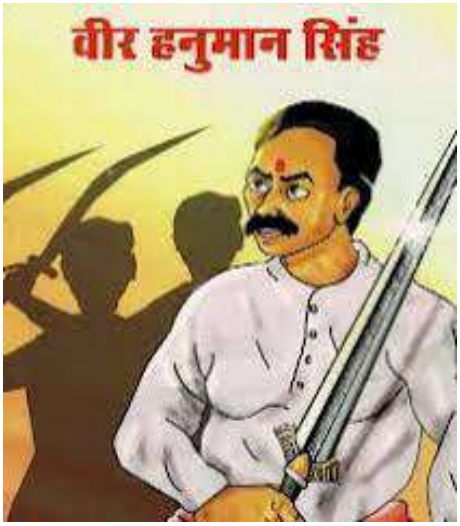

- पैदल सेना के लश्कर हनुमान सिंह द्वारा ब्रिटिश अधिकारी की हत्या
- अंग्रेजों द्वारा दमन की तीव्र कारवाई
- 17 लोगों को गिरफ्तार कर फांसी

3. रायगढ़ विद्रोह 1858
- 1858 में रायगढ़ जिले के उदयपुर में आदिवासियों द्वारा विद्रोह

- विद्रोह के फलस्वरूप उदयपुर के नरेश (राजा) के भाईयों को गिरफ्तार कर अंडमान-निकोबार में निर्वासन

4. मुरिया विद्रोह 1876
- मुरिया जनजाति द्वारा शुरू किए गए विद्रोह को दबाने के लिए ओड़िशा से आया ब्रिटिश सैनिकों का दल
- महीनों चली संघर्ष के बाद अंग्रेजों द्वारा क्षेत्र पर कब्जा

5. बस्तर का विद्रोह 1878-82
- बस्तर की रानी द्वारा स्वयं के अधिकारों की रक्षा के लिए विद्रोह
- अंग्रेज व आदिवासियों के बीच लंबा संघर्ष
- अंग्रेजों की हार, रानी के सामने अंग्रेजों का समर्पण

20 वीं सदी के विद्रोह

1. बस्तर का भुमकाल विद्रोह 1910
- आधुनिक इतिहास में बस्तर का विद्रोह भुमकाल के नाम से प्रसिद्ध

- बस्तर के मुरिया आदिवासियों द्वारा मुरिया राज स्थापित करने के लिए सशस्त्र क्रांति
- गुंडाधुर के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ क्रांति
- विस्तृत योजना के साथ क्रांति का आगाज
- अंग्रेजी सरकारी इमारतों, प्रतिष्ठानों आदि को बनाया गया निशाना
- शुरूआती दिनों में अल्पावधि के लिए मुरिया राज स्थापित
- महीनों चली क्रांति की लहर
- पूरी शक्ति के साथ अंग्रेजों का पलटवार
- दमनचक्र में सैकड़ों आदिवासियों की हत्या, हजारों को कठोर सजा

2. तानाभगत आंदोलन 1916-1918
- छत्तीसगढ़ के उत्तर-पूर्व क्षेत्र में हुआ यह विद्रोह
- शुरूआती दिनों में विद्रोह का स्वरूप हिंसक

- कालांतर में विद्रोह का स्वरूप अहिंसक
- असहयोग की विचारधारा के साथ विद्रोह राष्ट्रीय आंदोलन में समाहित

3. जंगल सत्याग्रह 1922-30
- छत्तीसगढ़ के धमतरी क्षेत्र में आंदोलन
- वन विभाग द्वारा कम मजदूरी दिए जाने व जलावन के रूप में प्रयोग किए जाने वाले लकड़ियों पर प्रतिबंध के फलस्वरूप जंगल सत्याग्रह

- बड़ी संख्या में सत्याग्रहियों की गिरफ्तारी
- लंबी सत्याग्रह के कारण वन-विभाग के कार्य-प्रणाली में सकारात्मक बदलाव
- 1930 के दौरान पुनः कई क्षेत्रों में जंगल सत्याग्रह
- सविनय अवज्ञा आंदोलन का हिस्सा
- सविनय अवज्ञा आंदोलन की वापसी से जंगल सत्याग्रह भी समाप्त

- स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास केवल घटनाओं का विवरण देना, प्रसंगों की गिनती करना या इतिहास के नायकों का चरित्र-चित्रण करना मात्र नहीं है, यह वास्तव में उन भावनाओं का विश्लेषण करना है, जिससे उस समय के क्षुब्ध समाज की संरचना बनी थी। जनता के मन-मस्तिष्क में स्वतंत्र होने के लिए जो चेतना उत्पन्न हुई थी, उस अभिव्यक्ति की पहचान करना अवश्यक है।
- भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास उपरोक्त आदिवासी के स्वतंत्र होने की चेतना के बिना अधूरा है, ऐसे में आवश्यक है इतिहास में इन घटनाओं को उचित महत्व दिया जाए।

5. गुजराती साहित्य पर गांधी का प्रभाव

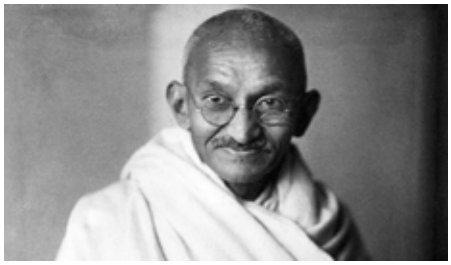

- 1857 के विद्रोह को भारत में ब्रिटिश शासन के विरोध की शुरूआत माना जा सकता है। 1857-1947 के बीच के 90 वर्ष भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के काल थे। इस काल और इस काल की भावनाओं को अनेक गुजराती लेखकों ने अपने साहित्यिक कृतियों में समेटा और प्रतिबिंबित किया है। गांधी जी के स्वदेश आगमन के बाद साहित्य में स्वतंत्रता की भावना और प्रखर हुई। उनसें प्रभावित लोगों की रचनाओं में यह भावना अपेक्षाकृत अधिक घनीभूत है।

गुजराती साहित्य व स्वतंत्रता आंदोलन

- रचनाकार दलपत राम ने अपनी कृति हुन्नर खान का आक्रमण (अनुवादित) में स्वतंत्रता की अपनी चाहत को अभिव्यक्त किया के ।
- नर्मद ने अपनी रचनाओं से 'स्वदेश गर्व' शब्द को प्रचलित किया और 'हुंकार अपने कूद पड़ो' के माध्यम से जन सामान्य का उत्साह बढ़ाया।

- महात्मा गांधी वर्ष 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटे व इन्होंने 1917 में साबरमती आश्रम तथा 1920 में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की। इन दोनों संस्थाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में अहम भूमिका निभाया।
- उमाशंकर जोशी, सुंदरम, काका साहेब कालेलकर, सुखलाल जी, मुनि जिनविजयी जी जैसे कई महान विद्वान गुजरात विद्यापीठ से जुड़े तथा इन सबने गुजराती साहित्य में अमूल्य योगदान दिया।
- इनके अलावा झवेरचंद मेघाणी, कृष्णलाल श्रीधराणी और रमन लाल वी. देसाई जैसे साहित्यकारों ने अपनी साहित्यिक कृति में स्वतंत्रता आंदोलन की भावनाओं को प्रतिबिंबित किया।
- उमाशंकर जोशी की कविताओं में गांधी जी व काका साहेब के विचारों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। इन्होंने अपनी कविताओं में स्वतंत्रता की तलाश की पीड़ा को प्रदर्शित किया है।

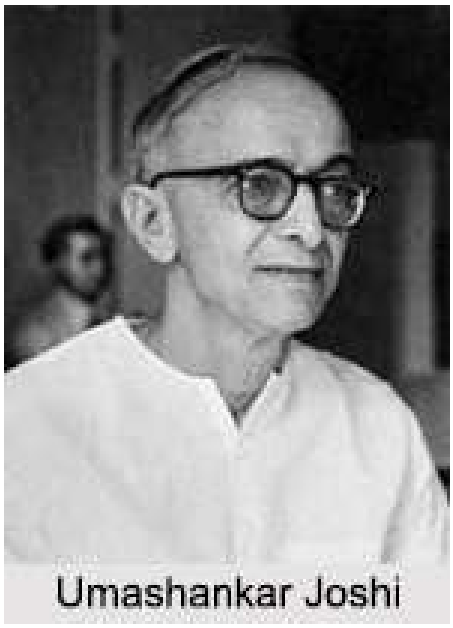
Umashankar Joshi

- झवेरचंद मेघाणी को गांधी जी ने राष्ट्रीय कवि का दर्जा दिया था। इनकी एक कविता संग्रह को ब्रिटिश सरकार ने जब्त भी कर लिया था। इनकी कई साहित्यिक रचना गुजरात के श्रेष्ठ रचनाओं में शामिल है।

- उमाशंकर जोशी, काका साहेब व सुन्दरम जैसे साहित्यकारों ने अपनी शिक्षा को अधूरा ही छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका निभाई थी, जिसके लिए इन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा था।
- उमाशंकर ने विसापुर जेल में अपने एकांकी संग्रह 'सांपों का समूह' (अनुवादित) की रचना की थी तथा अपनी एक कविता 'चुसायला गुठला' में स्वतंत्रता का वृक्ष बनने की कामना की थी।
- कविताओं के अलावा गुजराती उपन्यासों एवं नाटकों में भी स्वतंत्रता संग्राम की झलक दिखाई देती है।
- रमणलाल वी. देसाई की उपन्यास 'दबा हुआ आक्रोश' उल्लेखनीय है जिसमें 1857 की क्रांति का वर्णन है। विशिष्ट बात यह है कि इस उपन्यास का प्रमुख पात्र की पात्रता गांधी के छवि से मिलती है।
- जयंति दलाल का उपन्यास 'गांव के बाहर तीर्थ' कि विषय-वस्तु में भी ब्रिटिश के प्रति विरोधी स्वर परिलक्षित होते हैं।
- मनुभाई पंचोली 'दर्शक' के उपन्यास के नायक की छवि गांधी से काफी हद तक मिलती है। 'दर्शक' स्वयं भी स्वाधीनता आंदोलन में शामिल रहे थे।
- कृष्णलाल श्रीधराणी व सीसी मेहता के नाटकों में भी ब्रिटिश शासन के जुल्म को दर्शाया गया है। सीसी मेहता ने अपने नाटक में ट्रेन को ब्रिटिश शोषण का प्रतीक बताया गया है।
- जयंत खत्री का नाटक 'मंगल पांडे' में नाटककार ने मंगल पांडे के साथ-साथ 1857 के विद्रोह का वर्णन किया है। यह नाटक गुजरात के उल्लेखनीय नाटकों में से है।

- गुजरात के आदिवासी समूहों ने भी अंग्रेजों के खिलाफ कई विद्रोह किये, जिसे 'मानगढ़-विग्रह' के नाम से जाना जाता है। नाटक मानगढ़ में इन विद्रोहों का वर्णन है।
- कृष्णलाल का नाटक 'आठवीं दिल्ली' भी ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आंदोलन को इंगित करता है। कृष्ण लाल 7 शासकों से शासित रही दिल्ली की आजादी की कामना करता है।

- पन्नालाल पटेल की कहानी 'नेशनल सेविंग्स' में ब्रिटिश शासन द्वारा ग्रामीणों के साथ की जाने वाली आर्थिक शोषण का चित्रण किया गया है।
- मनुभाई पंचोली 'दर्शक' ने जालियां वाला बाग हत्याकांड पर आधारित एक नाटक लिखा, जिसे ब्रिटिश शासन द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया।

निष्कर्ष

- इस दौर की कई साहित्यिक कृतियां गांधी, पटेल व अन्य स्वाधीनता सेनानियों के बारे में है। गुजरात साहित्य के 3 आरंभिक काल-सुधार युग, पंडित युग व गांधी युग भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की परंपराओं को प्रति ध्वनित करते हैं, जिसकी झलक विभिन्न साहित्यिक कृतियों में मिलती है। गांधी के स्वदेश आगमन के बाद गुजराती साहित्य गांधी-केन्द्रित अथवा गांधी के विचारों के से प्रभावित हो गई, साथ ही गांधी के राष्ट्रीय पहल पर छा जाने से गांधी से प्रभावित लेखकों ने अपने कृतियों में गांधी जी को वरीयता दी।

6. उर्दू अदब की भूमिका

- भौगोलिक इकाई होने के बावजूद ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन से पहले भारत के वाशिदों में राष्ट्रवाद की भावना की कमी थी । वास्तव में लोग भारत को नहीं बल्कि अपने रिहायशी राज्यों को अपना क्षेत्र मानते थे । तत्कालीन समय में भारत में 600 से अधिक रियासतें थी ।
- मुगल साम्राज्य के कमजोर होने के बाद **EIC** (ईस्ट इंडिया कंपनी) की ताकत भारतीय क्षेत्रों में बढ़ती चली गई । शक्ति व वर्चस्व बढ़ाने के लिए **EIC** ने फूट डालो और राज करो की नीति के साथ कूट नीति, सहायक संधि, कानून व्यवस्था व सैन्य शक्ति का सहारा लिया, जिसका नतीजा भारत की गुलामी के रूप में सामने आया ।

- 1857 की क्रांति से कहीं पहले से ही कानून-व्यवस्था, भ्रष्टाचार, सामाजिक कुरीतियों आदि के बारे में उर्दू के शायरों ने अपनी नाराजगी जतानी शुरू कर दी थी । शाह हातिम, अशरफ, मोहम्मद रफी सौदा, मीर तकी मीर जैसे शायरों ने अपनी

रचनाओं से बिगड़ते सियासी हालात और राजगद्दी पर बैठे रजवाड़ों के प्रति विरोध जताया था।

उर्दू व स्वतंत्रता आंदोलन

- 1857 से 100 वर्ष पूर्व से ही शायरी व कविता **EIC** पर अप्रत्यक्ष वार करती रही है।
- 1757 में सिराजुद्दौला, 1764 में मीरकासिम व शुजा-उद्-दौला तथा 1799 में टीपू सुल्तान की हार पर उर्दू शायरों ने शोक व अफसोस प्रकट किया था ।

- 1857 के पूर्व **EIC** के नीतियों से भारतीय उद्योग धंधों की काफी क्षति हुई थी, जिससे भारतीयों का आर्थिक शोषण हुआ । इस पर भी उर्दू शायरों का गुस्सा फूटा था ।
- आत्म बलिदान के लिए हिम्मत व बहादुरी के जज्बे को बढ़ाने वाले कई उर्दू शायरों को अंग्रेजों ने फाँसी दे दिया था, जिनमें रहीम-उद्-दीन ईजाद, अजीज देहली, सुरूर गुरगानवी, गयासुद्दीन सरर, कमर-उद्-दीन रसीख देहलवी आदि प्रमुख थे ।

- 1857 की क्रांति के दौरान कई उर्दू शायरों ने शस्त्र विद्या से भी अंग्रेजों को नुकसान पहुँचाया । जनरल बख्त खान के साथ शायर अजीज मोरादाबादी व रूसवा बदायूँनी ने जंग के दौरान अपनी शहादत दी ।
- जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885) हुई तो इसके जनाधार को बढ़ाने तथा लोकप्रियता सुनिश्चित करने के लिए कई उर्दू शायरों व अखबार-नवीसों ने अपनी कलम से सहयोग दिया । मुंशी सज्जाद हुसैन, रतननाथ सरशर, त्रिभुवन नाथ सप्रू, ब्रजनारायण 'चकबस्त', अकबर इलाहाबादी, इस्माइल मेरठी जैसे उर्दू शायरों ने स्वयं को भारतीय संस्कृति और स्वतंत्रता के साहित्यिक सूत्रधारों के रूप में स्थापित किया ।

- बंगाल विभाजन के बाद शुरू हुए स्वदेशी आंदोलन में हसरत मोहानी, चकबस्त, जफर अली खान, बर्क देहलवी जैसे उर्दू साहित्य के स्तंभो ने राष्ट्रवाद को बढ़ाने में भूमिका निभाई तो मौलाना शिवली ने अंग्रेजो पर जमकर हमला बोला।

- होमरूल आन्दोलन, रॉलेट सत्याग्रह और जलियांवाला बाग हत्याकांड के दौरान मोहम्मद अली जौहर, डॉ. इकबाल, मीर गुलाम भीक नौरंग, आगा हश्र कश्मीरी और एहशान दानिश ने आजादी आंदोलन में स्वयं के स्तर पर विभिन्न तरीकों से योगदान दिया, साथ ही आमजन के उत्साह को भी बढ़ाया ।
- 20 वीं सदी के तीसरे दशक में त्रिलोक चंद महरूम, जोश मलीहाबदी, रवीस सिद्दकी, हफीज जालंधरी, मेला राम वफा, आनंद नारायण मुल्ला, एहसान दानिश, आजाद अंसारी जैसे उर्दू शायरों ने आजादी के आन्दोलन मे सहयोग दिया साथ ही अपने रचनाओं के माध्यम से लोगों के दिल में अंग्रेजों के प्रति नफरत को भर दिया ।
- 1936 में प्रोग्रेसिव राइटर्स मूवमेंट का आगाज हुआ, जिसमें ब्रिटिश शासन के खिलाफ सख्ती दिखाते हुए स्वतंत्रता आन्दोलन का पुरजोर सर्मथन किया ।
- इस आन्दोलन के बाद उर्दू सामाचार पत्रों, लेख-लेखकों, पत्रिकाओं, कविताओं, उपन्यासों, लघु कथाओं आदि की बाढ़ आ गई । इस दौरान उर्दू के कई शायर उभर कर आए, जिसमें असरार-उल-हक, फैज अहमद फैज, जांनिसार अख्तर, मोईन अहसान गजवी, जाफरी और कैफी आजमी शामिल थे ।

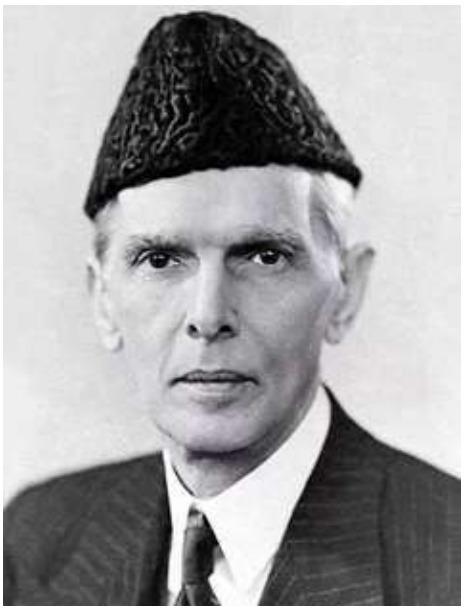

- मोहम्मद अली जिन्ना की विभाजन की नीति के विरोध में कई उर्दू साहित्य उपलब्ध हैं।
- कई साहित्यों में राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने संबंधी रचनाएं हैं।
- उर्दू कविता व शायरी के साथ गद्य भाग में भी विदेशी शासन के क्रूरता के प्रति विरोध दर्ज है।
- अजीमुल्लाह खान ने अपने उर्दू सामाचार पत्र 'पयाम-ए-आजादी' के माध्यम से लोगों पर गहरा प्रभाव डाला । इसकी

प्रभाविता को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने इसे पढ़ने वालों के घरों की तलाशी लेनी शुरू कर दी और जिस भी घर से 'पयाम-ए-आजादी' की एक भी प्रति मिल जाती थी उस घर को धाराशायी कर दिया जाता था ।

- मौलवी मोहम्मद वक्र के उर्दू अखबार से अंग्रेज इतने चिंतित हुए कि अंग्रेजों ने इनके घर को बर्बाद कर इनकी हत्या कर दी ।

- सर सैयद अहमद खान, मौलाना हाली और शिवली नोमानी जैसे लेखकों ने अपने पाठकों को जागृत करने के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण में भी योगदान दिया था।

- गांधी से प्रेरणा लेने वाले मुंशी प्रेमचंद्र गहरे राष्ट्रावादी थे। इनके द्वारा 'सोज ए-वतन' नामक लघुकथा संग्रह लिखी गई थी, जिसे ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया और एक-एक प्रति को चुन-चुन कर जला दिया गया ।

- बरशीद-उल-खैरी, अजीम वेग चुगताई सुदर्शन फाकिर, अली अब्बास हुसैनी, सोहेल अजीमावादी जैसे कई उर्दू अफसाना -निगारों ने भारत की आजादी के संदेश को अपने लेखनी से आगे बढ़ाया।

- सादत हसन मंटो, कृष्णा चंदर, अख्तर अंसारी, उपेन्द्रनाथ अश्क, हयातुल्ला अंसारी इस्मत चुगतई, राजिन्दर सिंह बेदी जैसे कई उर्दू कहानीकारों ने विदेशी राज से आजादी और एक नई धर्मनिरपेक्ष सामाजिक व्यवस्था की नींव रखी ।

- उर्दू भाषा से 'इंकलाब जिंदाबाद' व 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा', चिरस्थायी स्वाधीनता संग्राम का नारा आया है और 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजू-ए-कातिल में है' जैसी कालजयी रचना भी उर्दू से ही संबंधित है।

7. समकालीन स्त्री लेखन

- समाज सुधारकों का मानना था कि आम जनता को यदि शिक्षित करना है तो देशी भाषाएं ही इनका माध्यम बन सकती हैं। 19वीं सदी की राजनीति के दौर में 'स्त्री-प्रश्न' उभार पर था और राजनीति व लिंग की स्थिति एक- दूसरे से संबंधित थे ।

- ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन व्यवस्था ने एक नई पितृसत्तात्मक व्यवस्था को जन्म दिया, जिसने शिक्षा द्वारा नई स्त्री -छवि का आदर्श सामने रखा । पार्थ चटर्जी के मुताबिक इस नयी स्त्री को अपने ही समाज के पुरूषों व पश्चिमी स्त्रियों से भिन्न होना था । 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध आते-आते भारतीय बौद्धिक वर्गों को यह चिंता भी सताने लगी की स्त्रियों को जिस प्रकार की शिक्षा की जरूरत है, वैसी नहीं मिल पा रही है। तारकनाथ विश्वास ने लिखा था ऐसी बहुत कम पुस्तकें आई हैं जो स्त्रियों के पढ़ने लायक हो या फिर पति अपने पत्नी को पढ़ने दे ।

- रमाबाई ने 'हिन्दू स्त्री का जीवन' नामक पुस्तक में अमेरिकी पाठकों का आह्वान करते हुए लिखा- 'आज सभी भाई जो इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं, मेरे देश की स्त्री के बारे में सोचिए और जागिए । एक समान भाव से उन्हे आजीवन दासता एवं नारकीय दु:खों से मुक्त करने के लिए आगे बढ़िए। मित्रों और हितैषी लोगों, शिक्षित जनों एवं मानवतावादियों, मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप सभी जो इसमें रूचि रखते हों या अपने साथी के प्रति दया रखते हों,

भारतीय पुत्रियों के रूदन से चीखें, चाहे वह क्षीण ही क्यों न हो।'

नारी जीवन का विकास

- भारत में 1920 के आस-पास अभिजात्य वर्ग की मुसलमान स्त्रियाँ अंग्रेजी पढ़ने की ओर उन्मुख हुई ।
- इस दौर की पढ़ी-लिखी महिलाओं में मुहम्मद बेगम, नजर सज्जाद हैदर, अब्बानी बेगम जैसी महिलाएँ शामिल थी, जिन्होंने स्त्री लेखन में योगदान दिया।
- इस दौर में लिखे गए गद्य, पत्र, कविता एवं यात्रा वृतांत से ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि शुरूआती दौर में स्त्री लेखन मुख्यत: निजी अनुभवों की अभिव्यक्ति तक सीमित रही ।

- आबिदा सुल्तान की दादी जो भोपाल की सुल्तान (बेगम सुल्तान जहाँ) भी थी, की आत्मकथा तीन भागों में उर्दू व अंग्रेजी में प्रकाशित हुई। जिसका मुख्य विषय औपनिवेशिक सत्ता, राष्ट्रवादी विचारधारा का उदय व सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन से संबंधित था ।
- बेगम सुल्तान जहाँ ने 'अल हिजब' में मुसलमान स्त्रियों को पर्दे व हिजाब में रहने की नसीहत दी, साथ ही पाश्चात्य सभ्यता के बजाए इस्लामिक रीति-रिवाजों को प्रतिस्थापित किया ।
- भोपाल रियासत की ज्यादातर शासिकाओं ने आत्मकथा लिखी, जिसमें शाहजहाँ बेगम ने स्त्रियों को तहजीब सिखाने के लिए 'तहजीब-उन-निस्वान व तरबीयत-उल-इंसान' लिखी ।
- देश को स्वतंत्रता के साथ-साथ विभाजन भी मिली, जिसने दोनो पक्षों के स्त्री-पुरूष को प्रभावित किया। विभाजन की घटना ने राजनीतिक परिदृश्य पर जो परिवर्तन उपस्थित किए उनका भारत व पाकिस्तान स्त्री पर विशेष पड़ा, जिससे इस दौर में आत्मकथा लेखन में अप्रत्याशित वृद्धि हुई ।
- 'गुब्बार-ए-कारवां' बेगम अनीस किदवई द्वारा लिखी गई जो अधूरी ही दिल्ली से वर्ष 1983 मे मूल उर्दू मे छपी ।

- अनीस ने 'आजादी की छांव' शीर्षक नाम का संस्करण लिखा, जिसमें उन्होंनें भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद दंगों व शरणार्थियों की स्थिति का आंखों देखा हाल प्रस्तुत किया ।
- इन्होंने अपने लेखन में एक तरफ जहां विभाजन की वस्तु स्थिति का उल्लेख किया है, वहीं दूसरी तरफ इस दौर में स्त्रियों के जीवन का भी उल्लेख किया है, जिसमें उनके शिक्षा ग्रहण करने, परिवार वालों पर निर्भर रहने तथा जेंडर राजनीति आदि का उल्लेख किया है।
- राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने वाले बेगम कुदसिया एजाज रसूल की आत्मकथा 'फ्रॉम पर्दा टू पार्लियामेंट' में ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता के अनुभव का वर्णन किया गया है।

- इसमें वर्णन है कि कैसे एक मुस्लिम लड़की जिसका लालन-पालन एक अभिजात्य व राजनीतिक रूप से सक्रिय परिवार में हुआ व तमाम प्रतिबंधों के बावजूद पाकिस्तान आंदोलन का अंग बनकर अपनी पहचान बनाई ।
- स्वतंत्रता के बाद स्त्री की आत्मकथाओं को साहित्यिक साक्ष्यों के रूप में देखा जा सकता है, जो यह बताती है कि समाज में स्त्रियों का और स्त्रियों का समाज को देखने का नजरिया कैसा है।
- पाकिस्तान चली गई स्त्रियों में सामाजिक परिवर्तन व स्त्री मुक्ति की इच्छा इनकी आत्मकथाओं में देखी जा सकती है।

निष्कर्ष

- इन आत्मानुभवों को पढ़ने से इन स्त्रियों की टकराहटों-चाहे वे समाज के साथ हों, परिवार के साथ हों या स्वयं के साथ हों, के साथ-साथ व्यक्तित्व के अंतर्विरोधियों की भी परतें खुलती हैं। वे कौन से कारण हैं कि स्त्री आत्मकथा जैसी विधा का चुनाव करती हैं, जो भी उस आत्मकथा को पढ़ता हैं, वह उसे सराहे बिना नहीं रह सकता । ऐसा लेखन जो निजी और सार्वजनिक मुद्दों के बीच मध्यस्थता कर सके और साथ ही स्वानुभवों को भी व्यक्त कर सके ।
- जहां प्रारम्भ में स्त्रियाँ अभिव्यक्ति के लिए व्याकुल दिखाई देती थीं, वहीं 1990 के दशक के बाद उनमें आए बदलाव को रेखांकित किया जा सकता है। देश-विभाजन, विस्थापन आदि ने उन्हें अनुभव-परिपक्व बना दिया है, इसलिए अब वे अपने गद्य में पात्रों के रचती है । इन स्त्रियों की आत्मकथा

विद्या मे लेखन राष्ट्र आख्यान से स्वयं को जोड़ने और इतिहास मे स्वयं को जीवंत ऐतिहासिक चरित्रों के रूप में पहचाने जाने के प्रयास में देखा जाना चाहिए ।

8. स्वतंत्रता संघर्ष : बांग्ला रंगमंच

बांग्ला रंगमंच का इतिहास

- वर्ष 1795 मे रूसी भाषाविद् गेरासिम स्तेपानोविच द्वारा कलकत्ता मे पहली बार नाटक मंच का आयोजन

- शुरूआती दौर में यूरोपिय नाटकों का बांग्ला में रूपांतरण व स्थानीय लोगों द्वारा अभिनय
- 19 वीं शताब्दी के मध्यावधि के दौरान मधूसूदन दत्त द्वारा नाटकों का मंचन
- 1858 ई. में दत्त द्वारा 'शर्मिष्ठा' नाटक की रचना, जो महाभारत के देवयानि-य याति की कथा पर आधारित
- 1859 में नाटक 'एकेई की बोले सभ्यता' द्वारा पढ़े लिखे युवा बंगालियों पर व्यंग
- एक अन्य नाटक 'बुरो शालि केर घरेगे' द्वारा रूढ़ीवादी हिन्दुओं का उपहास
- दीनबंधु मित्र द्वारा 'नील दर्पण' के माध्यम नील खेतीहरों के विद्रोह का चित्रण
- गिरिश चन्द्र घोष द्वारा 1872 में नेशनल थिएटर की स्थापना, जिसके द्वारा नील-दर्पण का मंचन

- टैगोर के नाटकों के माध्यम से समाज मे आध्यात्मिकता का प्रसार
- आध्यात्मिकता के राष्ट्रवाद के प्रसार में टैगोर की रचनाओं चित्रांगदा (1892), राजा (1910), डाकघर (1913), रक्त करबी (1924) का महत्वपूर्ण योगदान

ब्रिटिश द्वारा प्रतिबंध

- 1876 में ब्रिटिश द्वारा एक अध्यादेश जारी, जिसके अंतर्गत ब्रिटिश सरकार बंगाल में किसी भी ऐसे नाटक पर प्रतिबंध लगा सकती थी जो सरकार की राय में राजद्रोह भड़काने वाला, अश्लील व जन-प्रतिकूल हो ।

- क्रांतिकारी भावनाओं पर प्रतिबंध के उद्देश्य से वर्ष 1876 में ड्रामेटिक परफॉरमेंस एक्ट लागू
- इन कानूनों द्वारा राष्ट्रवाद की फैलती भावना पर नियंत्रण
- सिनेमाघरों के बढ़ते प्रचलन को प्रतिबंध करने के लिए प्रथम विश्वयुद्ध के समाप्ति के दौर में वर्ष 1918 में सिनेमाटोग्राफ एक्ट का प्रावधान
- यह एक्ट ब्रिटिश में लागू सिनेमाटोग्राफ एक्ट 1900 का ही एक रूप, जो भारत में वर्ष 1920 में लागू

स्वदेशी आंदोलन के दौरान बांग्ला रंगमंच:-

- स्वदेशी आंदोलन के दौर में बांग्ला रंगमंच द्वारा अतीत का गौरव - गान
- 1903 में क्षिरोध प्रसाद विधाविनोद द्वारा नाटक 'प्रतापादित्य' का मंचन, जिसमें अंग्रेजों के खिलाफ विरोध करने का आहवान

- इस दौर में धार्मिक एकता को बढ़ाने व विदेशी शासन से मुक्ति के लिए नाटक का लेखन व मंचन
- 1906 में कलकत्ता के 2 प्रमुख थियटरों स्टार व मिनर्वा में विधाविनोद का नाटक पद्यमिनी, द्विजेन्द्र लाल राय का नाटक राणा प्रताप सिंह , अमृतलाल बसु का नाटक शाबाश बंगाली, गिरीश घोष का नाटक सिराजुद्दौला व हरनाथ वरिन का नाटक जागरण का प्रदर्शन
- 'राणा प्रताप सिंह' नाटक के मंचन की शुरूआत बंगाल-विभाजन के प्रति शोक व्यक्त करने के साथ
- इस दौर में लिखे गए द्विजेन्द्र राय के नाटक 'शाहजहाँ' का देशभक्ति गीत धन्य धान्येयुश्पेभोग आज भी लोकप्रिय
- प्रोसोंथियम थियेटर के मुक्ताकाशी लोक स्वरूप 'जात्रा' द्वारा देशभक्ति की भावना का प्रसार, 'जात्रा' पौराणिक विषयों से जुड़े

होते थे और इसके विधा बंगाल में बहुत लोकप्रिय हुए।

- अंग्रेजों द्वारा स्वदेशी आंदोलन के दौरान जब राष्ट्रभक्ति के मुद्दों पर प्रतिबंध लगा दिया था तब 'जात्रा' के विषयों द्वारा राष्ट्रभक्ति की भावना का प्रसार करने के लिए नाट्य मंचन किया गया । हलांकि जल्द ही इसकी गतिविधियों पर भी प्रति. बंध लग गया ।
- इन विषयों के नाट्य मंचन में अंग्रेजों को 'बुरे' व क्रांतिकारीयों को 'अच्छे' के रूप में दिखाया जाता था।

बांग्ला फिल्मों का विकास

- 20 वीं सदी के प्रारंभ मे ही देशभक्ति की भावना को प्रसारित करने के उद्येश्य से सिनेमा के विकास पर कार्य

- 1931 में पहली सवाक फिल्म 'आलम आरा' का निर्माण व प्रदर्शन
- भारत के अन्य हिस्सों में जहां पौराणिक विषयों पर फिल्म बनती थी, वहीं बंगाल क्षेत्र में देशभक्ति से संबंधित फिल्म का निर्माण-प्रदर्शन
- मूक फिल्म के दौर में बंगाल में 'विलेतफेरात 1921' जैसे फिल्मों का प्रदर्शन
- शुरूआती दौर में फिल्म निर्माण के लिए विदेशी साजो समान पर निर्भरता, जिससे फिल्म निर्माण में निरंतर समस्या
- 1939 में INC के एक सम्मेलन के दौरान नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा फरीदपुर जिले के सदस्यों को सिनेमा के प्रसार के लिए फिल्म कलैक्टिव बनाने का सुझाव
- इसी दौर में नेताजी द्वारा फिल्मों के निर्माण को प्रेरित करने के लिए 'रूपमंच पत्रिका' का प्रकाशन, यह पत्रिका फिल्म से संबंधित आंरभिक पत्रिकाओं में से एक

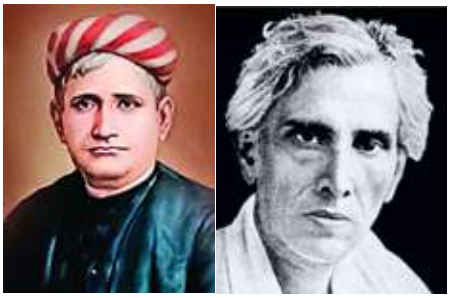

- सवाक फिल्मों के दौर में फिल्म निर्माताओं द्वारा बंकिम चन्द्र चटर्जी, शरत चंद्र व टैगोर के साहित्यिक रचनाओं को बनाया जाता था आधार ।
- कथानक के बांग्ला फिल्मों में योगदान के कारण, वर्तमान समय में भी बांग्ला फिल्मों के लिए बोई (पुस्तक) शब्द का प्रचलन
- 1930 के दशक में प्रथमेश बरूआ जैसे फिल्म स्टार का उद्भव, इनकी भावुकता वाली अभिनय काफी लोकप्रिय

बंगाली फिल्म : समस्याओं का दौर

- 1905 के बंगाल विभाजन का नकारात्मक असर
- 1911 में कोलकता से राजधानी दिल्ली स्थानांतरित किए जाने से मुद्रा प्रवाह में कमी
- 1942-43 के भीषण अकाल (बंगाल) के दौरान बंगाली फिल्म कलाकारों का बंबई के क्षेत्र में पलायन
- प्रसिद्ध फिल्म निर्माता विमलराय, ऋषिकेश मुखर्जी और अनेक फिल्म कलाकारों द्वारा स्थायित्व की तलाश में बंबई जाना।
- द्वितीय विश्व युद्ध के कारण भी बांग्ला फिल्म जगत पर नकारात्मक असर
- न्यू थियेटर्स जैसी प्रसिद्ध फिल्म स्टूडियो वित्तीय नुकसान के कारण बंद
- 1942-45 के दौरान सिर्फ 9 फिल्मों का निर्माण जबकि इसके पूर्व में प्रति वर्ष 15 फिल्मों का निर्माण
- महायुद्ध, अकाल और बंबई के फिल्म उद्योग का विकास होने से बांग्ला फिल्म उद्योग पूरी तरह कमजोर
- 1946 के दौरान वित्तीय प्रवाह मे वृद्धि से बंबई फिल्म बाजार में चमक
- 1946-47 के दौरान बंबई में 150 फिल्मों का निर्माण, जिसमें 143 फिल्मों का संबंध हिन्दी भाषा से, जबकि बांग्ला मे सिर्फ 23 फिल्मों का निर्माण

- 1947 में बनी बांग्ला फिल्म 'चंद्रशेखर' के अलावा तकरीबन सभी फिल्मों को वित्तीय नुकसान
- 1930-40 के दौरान बनी बांग्ला फिल्मों में राष्ट्रीयता का अभाव
- 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान लोगों में आई नव चेतना की भावना का बांग्ला फिल्मों द्वारा उपेक्षा
- फिल्मों के विषय क्रांतिकारी अथवा उत्तेजक होने से अंग्रेजी प्रतिबंध का डर
- बंगाली फिल्मों के क्षेत्र में फाइनेंसरो की कमी
- हालांकि पतन के इस दौर मे कुछ फिल्में बनाई गयी, जो बेहद लोकप्रिय रही, जिनमें मुक्तिस्थान 1937, प्रतिरोध 1941, सोल्जर्स ड्रीम 1948, सर्वहारा

1948, दुखीर इंसान 1954, संग्राम 1946, वंदेमातरम 1946, शरतचंद की कृति पर आधारित पाथेर दादी प्रमुख है ।

- आजादी के बाद कुछ ऐसी फिल्में आई, जिसने भारतीय दासता के कष्टों को उजागर किया, जिनमें भूली नई (1948), जयमात्रा (1948), चट्टग्राम अस्त्रागार लुंठन (1949), विप्लवी खुदीराम (1951), बियालीश (1951) प्रमुख है ।
- 'भूली नई' की विषय वस्तु बंगाल विभाजन सें संबंधित है, वहीं चट्टग्राम अस्त्रागार लंठन का संबंध सूर्यसेन (मास्टर दा) के वीरता से है।

- 'विप्लवी खुदीराम' का संबंध 1908 के बमकांड से है, जिसमें खुदीराम बोस की वीरता का चित्रण किया गया है वहीं 'बियालीश' की विषयवस्तु भारत छोड़ो आन्दोलन से संबंधित है।

निष्कर्ष

- वास्तव में आजादी का स्वागत जिस तरह बंबई व चेन्नई के फिल्म जगत द्वारा किया गया , वैसा स्वागत बांग्ला फिल्म निर्माताओं द्वारा संभव नहीं हो सका । स्वतंत्रता के बाद बंगाल विभाजन (बंगलादेश) ने बंगाल स्वतंत्रता आंदोलन के आदर्शवाद को मंद कर दिया।

- अकाल, दंगें, विभाजन आदि झेल रहे लोगों को जब उत्तम कुमार व सुचित्रा सेन की जोड़ी द्वारा अभिनीत ग्रामीण शहरी जोड़ों के रूप में दिखाया जाने लगा तो लोगों को यह खूब पसंद आया , क्योंकि लोगों को रोजमर्रा के कष्टों और विलाप के बाद हंसी खुशी वाली विषयों की जरूरत थी।

9. स्वाधीनता आंदोलन और राष्ट्रवाद

- भारतीय इतिहास में 1857-1947 के बीच हुए स्वाधीनता आंदोलन का अति महत्वपूर्ण स्थान है। इस दौर में जो भी आंदोलन हुए वे भारतीय जनता द्वारा किए गए संघर्ष मात्र का प्रतीक नहीं है, अतिपु यह 1857 की क्रांति और उसके बाद के संघर्ष में भारतीय जनता की साझी हिस्सेदारी और देश के लिए कुछ कर गुजरने वाली चेतना व चिरस्थायी जीवंत राष्ट्रवादी अध्याय भी है ।

- ऐसा कहा जा सकता है कि आधुनिक भारत की पूरी परिकल्पना विकसित करने में इस दौर की महत्वपूर्ण भूमिका रही, चाहे वह साहित्य हो या इतिहास, भारत की राजनीति हो या भूगोल। स्वाधीनता आंदोलन के इस संघर्ष ने तय किया कि आने वाले समय में भारतीय राष्ट्र कैसा होगा, इसकी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था कैसी होगी, स्वाधीनता के बाद भारतीय राजनीति का स्थिति वैश्विक परिदृश्य में कैसा होगा तथा इसकी विचारधारा की प्रकृति की कैसी होगी, भविष्य में भारत दूसरों राष्ट्रों की संप्रभुता का सम्मान करेगा या साम्राज्यवादी देशों की तरह विस्तारवादी नीति अपनाएगा ।
- दरअसल किसी भी राष्ट्र व इसके वर्तमान परिस्थितियों को समझने के लिए इतिहास के साथ ही लोक एवं ग्रामीण क्षेत्रों में मौजूद उन स्त्रोतों को भी समझने की जरूरत होती है, जिन्हें सामान्यत: इतिहासकार कम महत्वपूर्ण मानकर छोड़ देते हैं।
- प्रसिद्ध विचारक जॉन प्लॉमेंटाज ने राष्ट्रवाद पर विचार करते हुए यह समझने की कोशिश की आखिर अपने मूल चरित्र में राष्ट्रीयता या राष्ट्रवाद अंतत: एक सांस्कृतिक संरचना क्यों है और कालांतर में इसका स्वरूप राजनैतिक क्यों हो जाता है ? क्या यह एक सहज परिणति है या फिर इसकी संरचना ही ऐसी होती है।
- यद्यपि एक महत्वपूर्ण बात यह है कि यूरोप में विकसित राष्ट्रीयता नस्लीय, भाषाई, शासकीय, सामंतवादी, पूंजीवादी विचार धारा की तरफ इशारा करती हैं वहीं एशियाई, अफ्रीकी व लैटिन अमेरिकी देशों में राष्ट्रवाद का विकास लोक संस्कृति,

साहित्य, कला आदि जन मूल्यों के सहारे हुआ है।

- भारत में 1857 के बाद राष्ट्रवाद की जो धारा निर्मित हुई उसके निर्माण में दासता से मुक्ति की इस चेतना को देखा जा सकता है तथा इसकी अनेक जटिलताएं स्वाधीनता आंदोलन के दौरान दृष्टिगोचर होती है। इस आधार पर ऐसा कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रवाद का निर्माण ब्रिटिश साम्राज्यवाद से संघर्ष करते हुए राष्ट्र-मुक्ति की आकांक्षा के साथ हुआ।

भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण में सहायक तत्व:-

1857 का संघर्ष

- भारतीय स्वाधीनता संग्राम की पहली लड़ाई के नाम से प्रसिद्ध इस क्रांति की परिणति तो भारतीय सेनानियों की पराजय के रूप में हई लेकिन भारतीय इतिहास में यह एक बड़ी परिघटना के रूप में दर्ज है।

- इस क्रांति ने यह समझने में मदद की कि भारत की बुनियाद किन वैचारिक और सामाजिक धरातल पर टिकी हुई है।
- इस क्रांति ने केवल आधुनिकता का मार्ग प्रशस्त किया बल्कि भारतीय जनता के द्वारा उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद के खिलाफ किए गए संघर्ष ने सामाजिक विकास की प्रक्रिया को समझने में मदद भी की।
- इस क्रांति में सभी संस्कृतियों के शामिल होने से यह तय हो गया कि भारतीय धर्मनिरपेक्षता की नींव बेहद मजबूत है और यही वजह भी है कि आजादी के बाद पूरी दुनिया ने धर्मनिरपेक्ष भारत को नए अवतार के रूप में महत्व दिया।
- यह क्रांति देशी जनता का एक ताकतवर सत्ता के खिलाफ किया गया संघर्ष था, जिसमें बहादुरशाह जफर, नाना साहेब, तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई, मंगल पांडे, बेगम हजरत महल व कुंवर सिंह जैसे व्यक्तिव शामिल थे। इनके अलावा किसानों व मजदूरों ने भी ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना से लोहा लिया।

- वास्तव में इस क्रांति ने भारत में किसान केन्द्रित राष्ट्रवाद को बढ़ाने में मदद किया।

1873 और भारतीय साहित्य, प्रेस व पत्रकारिता

- 1857 के बाद कुछ ऐसे एक्ट्स के प्रावधान अंग्रेजों द्वारा भारत में लाए गए जिसके प्रतिरोध ने भारत में बौद्धिक चेतना का प्रसार किया।
- इन एक्ट्स में 1858 के दो एक्ट्स बेहद महत्वपूर्ण हैं:- 1. प्रेस एक्ट 2. आर्म्स एक्ट ।

- इन एक्ट्स की वजह से आजादी के पूर्व तक अनेक रचनाएं, पत्र-पत्रिकाएं और किताबें अंग्रेजों द्वारा प्रतिबंधित होती रही। जिनमें बालकृष्ण भट्ट की 'प्रदीप', प्रेमचंद की 'सोजे-वतन', सखाराम गणेश देउसकर की 'देशेर कथा' प्रमुख थी।
- उपरोक्त रचनाओं में ब्रिटिश के प्रति प्रतिरोध की स्पष्ट व गहरी चेतना उल्लेखित है, जिसमें आम जनता में ब्रिटिश के प्रति असंतोष का भाव-बोध कराया।
- हिन्दी के पिता के नाम से प्रसिद्ध भारतेन्दु हरिशचंद का भी इस क्षेत्र में अतुलनीय योगदान रहा।

- इस दौर में एक कवि महेश नारायण की कविता 'स्वप्न' इन दोनों एक्ट्स के खिलाफ प्रतिरोध की भावना विकसित करने के लिए लिखा गया था।
- 'स्वप्न' की एक पंक्ति से बौद्धिक राष्ट्रवाद की चेतना को महसूस किया जा सकता है- ''महादेव यह राज स्वाधीन कर दे।'' इस पंक्ति में महेश नारायण ने महादेव शब्द का प्रयोग कविता को धार्मिक रूप देने के लिए किया था ताकि उपरोक्त एक्ट्स के प्रावधानों से बचा जा सके।

- वास्तव में यह एक दिलचस्प तथ्य है कि इस दौर के कई रचनाकारों ने जैसे बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र आदि ने कुछ मिथ (धार्मिक नाम) के जरिए भारतीयता को समझाने की कोशिश है ताकि वे इसे धार्मिकता का रूप देकर एक्ट्स से बच सकें, लेकिन कई इतिहासकारों ने ऐसे कविताओं, रचनाओं को धार्मिक क्षेत्र से जोड़ दिया।

1885: कांग्रेस व बौद्धिक वर्ग का उदय

- महेश नारायण, भारतेन्दु हरिशचंद व बालकृष्ण भट्ट जैसे रचनाकारों ने राष्ट्रवाद की जिस धारा का निर्माण किया, उसका एक कारण 1885 में बनी राष्ट्रीय कांग्रेस व अंग्रेजी शिक्षा भी है जो धीरे-धीरे प्रतिकार स्वरूप भारतीयों के अंतर्मन में मातृभूमि व निज भाषा के प्रति गहरा लगाव पैदा करने में सफल रहा।
- कांग्रेस के गठन के फलस्वरूप भारतीय बौद्धिक वर्ग को एक मंच मिलता है, जिसका असर यह होता है कि अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण कर यह मध्य वर्गीय तबका भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- सावित्री बाई फूले व ज्योतिबा फुले द्वारा किए गए सुधारात्मक कार्यों से महाराष्ट्र में नवजागरण का प्रसार हुआ, जिसका विस्तार 1920 के दशक में आंदोलनों के दौरान राष्ट्रीय स्तर पर हो गया, साथ ही अंबेडकर के आने के बाद इस क्षेत्र में और प्रगति हुआ।

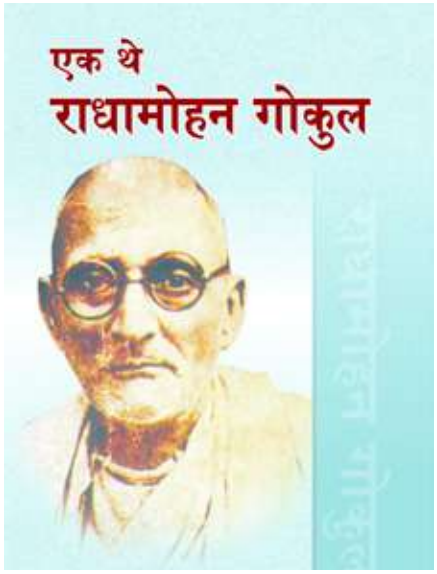

- 1890 के आस-पास हिन्दी लेखक राधामोहन गोकुल ने अपने लेखन के माध्यम से नवजागरण को प्रसारित करने में भूमिका निभाई
- 1910 में प्रकाशित इनकी रचना 'अंग्रेज डाकू' ब्रिटिश द्वारा प्रतिबंधित भी हो जाती है क्योंकि इसने राष्ट्रवाद के ऐसे स्वरूप को विकसित करने में अग्रणीय भूमिका निभाई जो ब्रिटिश के लिए खतरनाक था।
- हिन्दी के आलोचकों में शामिल रामविलास वर्मा व कर्मेदु शिशिर उन्हें हिन्दी नवजागरण का एक महत्वपूर्ण अंश मानते है। लेकिन दुर्भाग्य यह हे कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनकी किसी रचना का उल्लेख नहीं है।
- वास्तव में ये लेखक बौद्धिक स्तर पर पूरे देश में ब्रिटिश राज के खिलाफ प्रतिरोध की जिस राष्ट्रवादी सामूहिक चेतना का निर्माण करते हैं उसका महत्व बाद में भारतीय साहित्य में गहराई के रूप में परिलक्षित होती है।

1905: बंगाल विभाजन और स्वाधीनता आंदोलन का उदय

- बंगाल विभाजन के बाद टैगोर की कई रचनाओं में राष्ट्रवाद को प्रेरित करने वाले तथ्यों की भरमार है लेकिन टैगोर का राष्ट्रवाद, किसान केन्द्रित सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की ओर आकर्षित है।

- टैगोर गीतांजलि सहित कई अन्य रचनाओं में भारतीय राष्ट्र की जिन छवियों का निर्माण करते है, उनका असर भारत सहित पूरी दुनिया पर पड़ता है।
- किसान केन्द्रित राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने में प्रेमचंद्र जैसे लेखकों का भी अहम योगदान है। प्रेमचंद्र ने कृषक समाज के दर्द को बड़ी मार्मिकता से रचा है।
- टैगोर बंगाल विभाजन के दु:ख को 'गीतांजलि' में प्रकट करते है जो बेहद भावुक कर देने वाला है।

- गीतांजलि के एक भाग में टैगोर लिखते हैं कि 'बंग-भंग के शोक में डूबा बंगाल भविष्य के निर्माण के बारे में सोच रहा है, साथ ही अपनी छीनी गई समृद्धि को पुन: प्राप्त करने के लिए प्रार्थना कर रहा है।'
- बंग-भंग स्वाधीनता आंदोलन का वह भाग है, जिसे जन समाज किसान राष्ट्रवाद के साथ रचता है, जिसकी पहचान राष्ट्रवादी नेताओं में सर्वप्रथम गांधी द्वारा की गई।
- वास्तव में तिलक, गोखले आदि नेताओं द्वारा राष्ट्र के प्रति एक नई चेतना

का विकास किया जाता है, जिसे गांधी द्वारा कालांतर में मजबूती प्रदान किया जाता है।

1917 गांधी, अंबेडकर, और स्वाधीनता आंदोलन की राष्ट्रीय धारा

- गांधी जी प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1917 में चंपारण की यात्रा करते हैं, जहां वे नील की खेती करने वाले किसानों से मिलते हैं जो एक बड़ी परिघटना है।

- चंपारण आंदोलन, जो नील की खेती करने वाले दयनीय किसानों के हित को ध्यान में रखकर चलाया जाता है, इस दौरान गांधी ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण करते हैं साथ ही इसके बाद वे पूरी भारत की यात्रा करते हैं जिस दौरान गांधी को नए भारत का दर्शन होता है, जहां की संस्कृति, सभ्यता व आर्थिक स्वावलंबन गांधी को प्रभावित करते है और किसानों की दरिद्रता व बेबसी उन्हें आर्थिक राष्ट्रवाद की ओर मोड़ती है।
- गांधी जी को किसानों के ऊपर चढ़ा कर्ज, अंग्रेजों द्वारा उनसे जबरदस्ती करवाई जा रही नील, अफीम, गांजा आदि की खेती विचलित करते थे। इस से निजात दिलाने व किसानों को राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा बनाने के लिए गांधी किसानों के बीच उन्हीं के जैसे हो जाते हैं, उन्हें सत्याग्रह का महत्व समझाते हैं, और असहयोग की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं।

- कई रचनाओं से ऐसा पता चलता है कि गांधी का लोक समाज में यह प्रभाव इतना गहरा था कि लोगों को लगता था कि खादी और चरखा के जरिए गांधी ब्रितानी हुकूमत की जड़ें हिला देंगें व अंग्रेजों को भारत से भगाने में सफल हो जाएंगें।
- बीतते समय के साथ गांधी के विचारों का असर बढ़ता गया और 1918 से 1942 के दौरान अंग्रेजी राज के खिलाफ सत्याग्रह, अहिंसा, स्वराज, चरखा, समाजवाद, उग्र राष्ट्रवाद व करो या मरो जैसे बेहद प्रभावशाली शब्दावली देश भर में फैल गए।

- इसी दौरान साहित्य से लेकर राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में गांधी व अंबेडकर सहित भंगत सिंह, जिन्ना, पेरियार, बोस आदि नेता जिस भारत की परिकल्पना लेकर स्वाधीनता आंदोलन में आते हैं, वह एक नया राष्ट्रवादी भारत है और यह राष्ट्रवादी भारत ब्रिटिश साम्राज्यवाद सहित, पारंपरिक भारतीय समाज की जड़-स्थापनाओं की भी चूलें हिलाना शुरू कर देते हैं।
- गांधी पढ़ी-लिखी मध्यवर्गीय जनता के साथ-साथ कृषक समाज को भी आंदोलन में शामिल करने में सफल होते हैं, यद्यपि इस दौरान बोस, भगत सिंह, अंबेडकर जैसे नेता भी स्वाधीनता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं पर 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन एक नई चेतना का प्रसार करने में सफल होता है।

निष्कर्ष

- वास्तव में 1857-1947 के बीच भारतीय राष्ट्रवाद का जो रूप दिखाई देता है वह आम जनता के उस राष्ट्रवाद की तरफ संकेत करता है जिसके केन्द्र में राष्ट्र-मुक्ति के अलावा ज्यादा कुछ नहीं है। इस राष्ट्र मुक्ति का पूरा आधार जनता के व्यापक हित को लेकर निर्मित हुआ है तथा जिसके केन्द्र में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता और सामाजिक न्याय के साथ ही राष्ट्र का विकास एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है।
- भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान राष्ट्रवाद की जो छवियां निर्मित हुई थीं, उस पर अनेक इतिहासकारों ने गहन विचार विमर्श किया तथा इसी कारण भारतीय इतिहास के इस दौर को भारतीय राष्ट्रीयता की एक बुनियाद के रूप में देखा जाता है।
- यह भारत उतना ही लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष है जितना की दुनिया के पटल पर होना चाहिए तथा जिसकी सामूहिक चेतना भारतीय शान और चिंतन की परंपरा पर केन्द्रित होना चाहिए।

10. संस्कृत सेवियों का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान

- साहित्य समाज का दर्पण है, ऐसे में उस कालखंड में देश के हर क्षेत्र के रचनाकारों ने न केवल साहित्य को ही सींचा बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन में अपना योगदान देते हुए जेल यात्राएं भी की। त्रिविक्रम भट्ट के अनुसार:-
- ''किम् कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मत: ।''
- अर्थात कवि के उस काव्य का क्या लाभ जो भला पाठक के हृदय को झकझोर न दे ?
- अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए हंसते-हंसते अपने प्राण-न्योछावर करने वाले अमर शहीदों की शहादत को आज पूरा देश आजादी के 75वें वर्ष 'अमृत महोत्सव' के रूप में मना रहा है।

- भारत की यह पावनी धरा बलिदान भूमि के रूप में भी जानी जाती है। यह वही भूमि है, जिसके युगों की जोश भरी हुंकार से शत्रुओं का दर्प भस्मसात् हो जाता है। जिस भूमि के प्रत्येक वर्ण का लाल गुलामी का नाश करने के लिए युद्ध की दहकती ज्वाला में कूद पड़ता है।
- हमारे देश के स्वातंत्र्य चेताओं, साहित्यकारों व समाज सुधारकों के योगदान को चिरस्मरणीय बनाने हेतु आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में पूरा देश उन्हें अपनी अर्घ्य रूप में भावभीनी श्रद्धांजलि दे रहा है। ऋग्वेद की यह पंक्ति विशेषत: बलिदान वीरों के लिए है:-
- ''अग्ने-व्रतपते-व्रतम् चरिष्यामी।'' अर्थात यदि जीवन चाहते हो तो आग के शोले बन जाओ।

- संस्कृत का योगदान भारत वर्ष की एकता, अखंडता व देश प्रेम का सरसराग उस कालखंड के संस्कृत साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में गूंजकर जन-जन को जगाने का उत्कृष्ट कार्य किया।
- महाकवि गेटे, ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े बहुत से नाम इस कड़ी मे जोड़े जा सकते है। महर्षि अरविंद का वैदिक धर्म के लोप एवं अंग्रेजों द्वारा किए गए अमानवीय व्यवहार से इनका हृदय विलख पड़ता है।

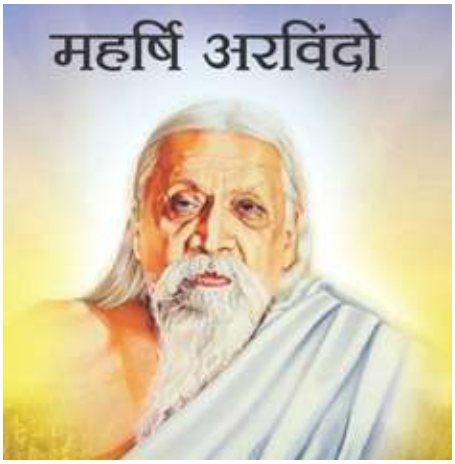

- महाकवि मेघाव्रताचार्य विरचित 'दयानंद दिग्विजय' महाकाव्य से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि अरविंद आजादी के लिए नींव की संकल्प रखते है, इस महाकाव्य का प्रथम प्रकाशन 1938 में बड़ौदा से व दूसरा प्रकाशन 1947 में हुआ ।
- मेघाव्रताचार्य के विचारों से प्रेरित होकर आमजनों ने यथाशक्ति आजादी -समर मे अपना योगदान दिया । उस दौरान सर्वत्र अंग्रेज की दमनकारी नीतियों का बोलबाला था लेकिन देश का आम नागरिक भी भारत की आजादी के लिए अपने प्राणों की बलि देने के लिए तैयार था। बात चाहे चंपारण की हो अथवा जालियांवाला बाग की, आमजन ने ब्रिटिश जुल्मों-सितम से संघर्ष करना सीख लिया था।

- वास्तव में वैदिक काल से मातृभूमि के प्रति प्रेम, राष्ट्रीय रक्षा और देश के प्रति सर्मपण की भावना का उद्घोष ''माता भूमि: पुत्रोअहम् पृथिव्या'' में देखने को मिलता है, अर्थात धरती हमारी माँ है और हम सब इसकी लाडली संताने ।
- संस्कृत का उपरोक्त वचन हमें यह सिखलाती है कि मातृभूमि की रक्षा के लिए सर्वस्व त्याग देना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है, क्योंकि इसी धरती मां का अन्न-जल खा- पीकर, इसकी शुद्ध वायु के झोंको और वृक्षों की घनी छांव मे बैठकर हम बड़े हुए हैं।

- पृथ्वी की महिमा का उल्लेख यत्र-तत्र

सर्वत्र बिखरा हुआ है। अथर्ववेद के 'पृथ्वी सूक्त' और ऋगवेद के 'अरण्यानी सूक्त' में भी धरती माँ के वैभव की खूबसूरती देखने को मिलती है।

- देश की आजादी की कड़ी में 1982 ईस्वी में गांधी शांति प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित प्रमुख स्वातंत्र्य चेता वैष्णवाचार्य श्री भगवादाचार्य विरचित 'भारत परिजातम्' व 'परिजातापहार', जिसमें अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन (1942) का विशेष वर्णन है तथा इसी प्रकार पारिजात सौरभं ग्रंथों में गांधी जी के योगदान का वर्णन किया गया है।
- पंडिता क्षमा राव महोदया ने 'सत्याग्रह गीता' तथा 'उत्तर सत्याग्रह गीता' में देश की स्वतंत्रता, मातृभूमि की रक्षा एवं संस्कृत समाज में स्वतंत्रता का संदेश दिया । इनका मानना था कि अंग्रेजों की दमनकारी राज्य रहने से अच्छा है कि हम अपनी जान दे दें ।
- इनकी एक पंक्ति ''पारितंत्र्याभिभूतस्य देशस्याभ्युदयः कुतः'' अर्थात गुलामी किसी देश के लिए भला कैसे हो सकती है?

- संस्कृत के बहुत से रचनाकारों ने चंद्रशेखर के योगदान को सराहा, साही ही इन्होंने संदेश दिया कि चंद्रशेखर की भांति आम नागरिक भी आजाद बनें ।
- 'आजाद' जब वाराणसी स्थित संस्कृत महाविद्यालय के छात्र थे, तभी वे स्वतंत्रता समर में कूद पड़े थे । वे मात्र 12 वर्ष की आयु मे संस्कृत सीखने आये थे और इन्होंने आगे चलकर देश सेवा में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया ।

- विद्वान वैदिक सातवलेकर जी के वैदिक व राष्ट्रीयता से संबंधित लेख लिखे जाने के कारण अंग्रेजों नें इन्हें 7 वर्ष की कठोर कारावास दी, लेकिन सातवलेकर लेकर बिना विचलित हुए देश सेवा में जुड़े रहे ।
- संस्कृत रचनाकारों से प्रभावित होकर तत्कालीन गुरूकुलीय परंपरा के तहत अध्ययन करने वाले संस्कृत महाविद्यालयों के छात्रों ने उल्लेखनीय योगदान दिया । हरिद्वार गुरूकुल से जुड़े सातवलेकर जी प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता के क्रांतीकारियों से जुड़े हुए थे ।

- राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत एवं राष्ट्रीय शिक्षा के अमरपुरोधा बाल गंगाधर तिलक ने केसरी पत्र में 'देशस्य दुर्भाग्यं' और 'इमें उपायाः न स्वाधिनः' जैसे अंग्रेजी विरोधी लेख लिखा, जिसके कारण अंग्रेजों ने देशद्रोह का आरोप लगाकर इन्हें 6 वर्ष की कारावास दी।
- कारावास में तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए इन्होंने 'गीता रहस्य' नामक गीता भाष्य लिखा ।
- अपने वीर रस की रचनाओं से इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को नया रूप दिया, जिसनें इन्हें अजर-अमर बना दिया ।
- 1956 में तिलक के जन्म शताब्दी के मौके पर देश के कई संस्कृत विद्धानों ने तिलक जी के संस्कृत में योगदान को उल्लेखित किया ।

- पंडित अंबिका दत्त व्यास रचित 'शिवराज विजयम्' नामक संस्कृत उपन्यास के माध्यम से इन्होंने स्वतंत्रता का बिगुल बजाया था। दरअसल इस उपन्यास के प्रमुख पात्र शिवाजी हैं, जिन्हे ब्रिटिश का दमन करते दिखाये जाने की कोशिश की गई है।
- इस कड़ी मे हरदोई के मथुरा प्रसाद दीक्षित को योगदान भी अहम है, जिन्होंने 'भारत विजयम्' नाटक की मदद से स्वतंत्रता का शंखनाद फूंका । स्वतंत्रता से जुड़े इस नाटक को अंग्रेजो द्वारा जब्त कर लिया गया था
- स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर की रचना 'काला पानी' में स्वतंत्रता देवी को संबोधित करते हुए तथा उन्हें प्रणाम करते हुए उनका मंगलगान किया गया साथ ही देश की मंगल कामना भी की गई ।

- विनायक दामोदर सावरकर की आजादी में योगदान पर आधारित 'विनायक वैजयंती' श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा लिखी गई थी ।
- श्रीधर ने एक अन्य रचना 'शिवराज्योदय' महाकाव्य में शिवाजी द्वारा स्वराज की स्थापना, क्षात्र धर्म व पारतंत्र्य मुक्ति आदि को बहुत अच्छे से उकेरा है।

- श्रीधर की रचना 'विवेकानंद विजयम्' भी प्रसिद्ध नाटक है।
- संस्कृत के रचनाकारों ने तिलक, लाला लाजपतराय, विपिन चंद्र पाल, वीर सावरकर, लक्ष्मीबाई, बोस, शहीद भगत सिंह ,आजाद, स्वामी विवेकानंद, गांधी , शिवाजी, मंगल पांडे, महाराणा प्रताप जैसे कई राष्ट्रभक्तों पर अपनी रचनाएं लिखी ।
- धर्मदेव विद्यावाचस्पति, सुप्रसिद्ध विद्वान पांडुरंग शास्त्री और गोर्वधन पीठ के श्री भारती कृष्ण जैसे संस्कृत के अगाध विद्वानों ने जेल यातनाएं सहीं ।
- प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान पंढरीनाथ आचार्य ने पूर्ण स्वतंत्रता की मशाल जलाई ।
- प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी पंडित दुर्गा दत्त त्रिपाठी ने 'रणभेरी' नामक पत्रिका का श्रीगणेश किया, जिसमें इन्होनें स्वतंत्रता आंदोलनकारियों का उत्साहवर्द्धन किया।

- इन्होंने 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' की तर्ज पर संस्कृत में 'ध्वजों धूयतां धर्म राष्ट्रस्य लोके' की रचना की ।
- सत्यदेव वशिष्ठ एक स्वाधीनता आंदोलनकारी थे जिन्होंने 1956 ई. में सत्याग्रह नीति काव्य की रचना की । तत्कालीन स्कूली छात्रों के साथ मिलकर इन्होंने स्वाधीनता संग्राम में अपना सहयोग दिया तथा जयपुर में प्रजामंडप की स्थापना कर स्वातंत्र्य ज्योति का अलख लगाया । हीरालाल शास्त्री व पंडित बिहारी लाल शास्त्री जैसे कई विद्वानों ने इसमें अपना सहयोग किया ।
- वासवाड़ा के संस्कृत सेवी और स्वतंत्रता सेनानी पंडित पन्नालाल जोशी जैसे बहुत से संस्कृत सेवियों का राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान अहम है।

- काशी के संस्कृत विद्यापीठों का तो इस आंदोलन में चिरस्मरणीय योगदान सदा बना ही रहेगा। इसी प्रकार जयपुर का महाराजा संस्कृत कॉलेज और देश के अन्य संस्कृत कॉलेज के छात्र वर्ग का योगदान अविस्मरणीय है।
- पंडित वैद्यनाथ शास्त्री संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान थे, जिन्होंने देश भ्रमण कर लोगों में अलख जगाने का कार्य किया ।
- पंडित शिवदत्त शुक्ल व पंडित राम शास्त्री जैस संस्कृत सेवियों ने कई बार जेल की यात्राएं की ।
- राष्ट्र काव्य 'अमृतम्' जैसी रचनाओं के रचयिता पंडित प्रभु दत्त शास्त्री, 'राष्ट्रवाणी' के रचयिता रामनाथ पाठक आदि ने आजादी से संबंधी कई अन्य रचनाएं लिखी भी हैं।
- संस्कृत रचनाकारों में 'बंग्लादेश विजय' के रचयिता पंडित बटुकनाथ शास्त्री, वीर सरन्गणी के रचयिता रतिनाथ झा, 'स्वामी विवेकानंद' के लेखक भाण्डार त्रयम्बकम शास्त्री, 'भगत सिंह चरितम्' के दरिदत्त पालीवाल 'पंजार शुक:' के रचयिता शंखनाद अप्पा शास्त्री शामिल हैं।
- 'पंजार शुक:' के माध्यम से रचनाकार ने शुक (तोता) के माध्यम से परतंत्रता की पीड़ा को दर्शाया है। इस रचनाकार ने संस्कृत रचना 'चंद्रिका' में अंग्रेजों के कार्य का खूब विरोध किया।

- बिहार के पंडित जानकी बल्लभ शास्त्री, महावीर प्रसाद जोशी, द्वारिका प्रसाद त्रिपाठी आदि का स्वतंत्र संग्राम मे बेहद महत्वपूर्ण योगदान है।
- जोधपुर के ओम बाबा नाथ से मशहूर विख्यात पंडित गोपीकृष्ण व्यास ने 1942 की क्रांति के दौरान जेल यात्रा की थी ।
- पंडित विष्णु दत्त शुक्ल ने असहयोग

आंदोलन के दौरान स्वातंत्र्य से ओत-पोत रचनाओं से युवाओं में जोश भरा था।

- पंडित नवल किशोर कांवर, देवकीनंदन शर्मा व हिन्दी कवि नागार्जुन ने भी राष्ट्र को प्रेरित करने वाली कविताएं लिखी ।

- हिन्दी के प्रसिद्ध रचनाकार चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने भी संस्कृत स्वातंत्र्य से संबंधित रचनाएं लिखी । पंडित मदनमोहन मालवीय के आदेश पर 1920-22 के दौरान इन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य भी किया था। 1905 में प्रकाशित 'समालोचक' पत्र में इन्होंने लिखा कि विदेशी वस्तुओं की होली जलाने से हमें मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- विधु शेखर भट्टाचार्य 'भारत भूमि:' महादेव शास्त्री, डॉक्टर वेंकटराघवन, रामकृष्ण भट्ट (स्वातंत्र्य ज्योति) आदि विद्वानों ने भी राष्ट्र की सेवा में योगदान दिया ।
- केशव गोपालकृत 'तिलक सौभाग्यम्', यमुना दत्त शास्त्री का 'वीर तरंगरंगम', शिवगोविद त्रिपाठी का 'गांधी गौरवं', काशीराम पांडेय का 'चंदमौलि प्रणीत' आदि प्रमुख रचनाएं हैं।
- भारत सरकार के प्रकाशन विभाग ने हिन्दी भाषा में 'भगत सिंह: अद्वितीय व्यक्ति:' का 4 खंडों में स्तरीय प्रकाशन किया है। इसी प्रकार महात्मा गांधी सहित अन्य क्रांतिकारियों व सेनानियों के ग्रंथ संग्रहणीय है।

निष्कर्ष

- उस काल खंड में संस्कृत पत्रकारिता ने भी स्वतंत्रता की मशाल जलाई। 1832 मे बंगाल की रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की शोध पत्रिका प्रकाशित हुई, जिसमें अंग्रेजी व हिन्दी दोनो भाषाओं के लेख होते थे किंतु संस्कृत की सर्वप्रथम पत्रिका 1865 मे वाराणसी से 'काशीविद्या सुधा निधि' नाम से प्रकाशित हुई।
- जयपुर से संस्कृत 'रत्नाकर' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 1904 में शुरू हुआ जो 1949 तक चला । कालांतर में यही पत्रिका अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन का मुख्य पत्र बना ।
- उस दौरान देश के विभिन्न स्थानों से मंजूभाषिणी, संस्कृत साकेतम्, देववाणी, मंजूषा, अमर भारती, सूर्योदय, सुप्रभातम् जैसी कई पत्रिकाएं चिरस्मरणीय कही जा सकती हैं। इसी प्रकार से कई अन्य पत्रिकाओं और इनके संपादकों का योगदान भी विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

11. हिन्दी साहित्य की चेतना

- हिन्दी साहित्य की शुरूआती रूप में खड़ी बोली का विकास हुआ, जिसका इतिहास हजारों साल पूर्व से ही होता आ रहा है । अमीर खुसरो को खड़ी बोली का पहला कवि माना गया है, परंतु वर्तमान में खड़ी बोली हिन्दी साहित्य का जो स्वरूप है उसका विकास 19वीं शताब्दी में शुरू हुआ। यह वही समय था जब भारत के स्वतंत्रता आंदोलन ने भी स्वयं का संगठित करना शुरू कर दिया था। वास्तव में स्वतंत्रता आंदोलन व हिन्दी साहित्य का विकास एक-दूसरे के पूरक के रूप में हुआ।

हिन्दी साहित्य का विकास

- हिन्दी वस्तुत: आजादी की भाषा बन गई और यह होना स्वाभाविक ही था, क्योंकि गांधी, पटेल, तिलक, बोस, लालाजी, गोखले, राजगोपालाचारी जैसे अहिन्दी भाषी क्षेत्र के नेता जब स्व-राज्य से बाहर निकलते थे तो उन्हें अपनी बात रखने के लिए हिंदी का प्रयोग करना होता था।

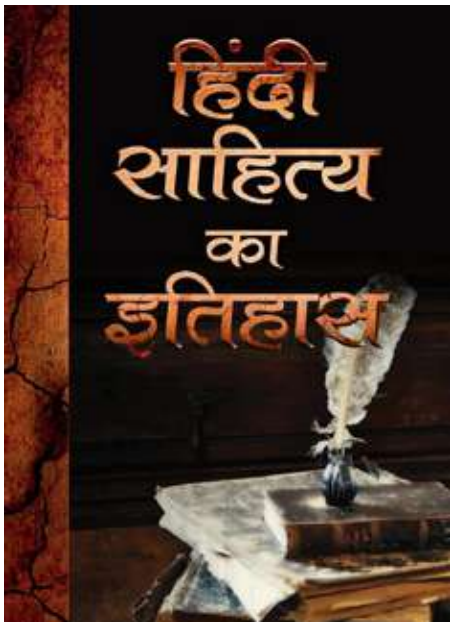

- जिस गति से आजादी की लड़ाई विकसित हुई, ठीक उसी रफ्तार से हिन्दी साहित्य भी विकसित हुआ, इसी गति से हिन्दी गद्य व कविता का विकास हुआ, तथा इसी गति से हिन्दी की साहित्यिक चेतना का विकास हुआ।

- वास्तव में हिन्दी का संबंध उन्हीं मूल्यों/सिद्धांतों से रहा, जिन मूल्यों का संबंध आजादी के आंदोलन से था।

हिन्दी को विकसित करने वाले सिद्धांत

- आजादी से पूर्व भारत वर्ष में सामाजिक आर्थिक सुधार किए गए जिनमें राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, तिलक, परमहंस, विवेकानंद, श्री अरविंद, गांधी, स्वामी दयानंद व टैगोर जैसे विचारकों का योगदान था, जिन्होंनें इस प्रयास में हिन्दी भाषा का सहारा लिया।

- भारत की स्वतंत्रता संघर्ष सिर्फ विदेशी गुलामी से मुक्ति ही तक सीमित नहीं था बल्कि देश भर में व्याप्त कई तरह के आर्थिक-सामाजिक संकट से मुक्ति तक विस्तृत था। इसको समाप्त करने के लिए नए वैचारिक भावना का सूत्रपात होना जरूरी था। इसी कड़ी में सबसे पहले बांग्ला का विकास हुआ, तदोपरांत हिन्दी, मराठी, मलयालम, ओड़िशा, व पंजाबी भाषाओं का विकास हुआ।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ स्वतंत्रता को चिरस्थायी बनाये रखने, समाज में व्याप्त सभी तरह के कुरीतियों को खत्म करने व स्वतंत्रता की महत्व को समझ सकने के लिए हिन्दी ने ऐसे साहित्य के विकास पर बल दिया, जिसे निम्न अभिव्यक्ति समाहित हो:-

1. समाज सुधार
2. भारतीय इतिहास का गौरव गान
3. प्राचीन साहित्य व पुराकथाओं का नवीनतम रूप में संग्रहण
4. देश प्रेम बढ़ाना
5. प्रकृति प्रेम
6. मानवता प्रेम व विश्व प्रेम
7. व्यक्ति स्वतंत्रता का स्वर
8. समाजवाद

समाज सुधार

- समाज सुधार उस युग के साहित्यिक रचनाकारों का प्रमुख स्वर था।

- भारतेंदु हरिशचंद्र की नाटक 'अंधेर नगरी चौपट राजा' में जिस तरह से सामाजिक विडंबनाओं पर व्यंग किया गया, वह इसका उदाहरण है।
- कई समाज सुधारकों ने (स्वामी दयानंद, गांधी) हिन्दी साहित्यों के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों का विरोध कर सामाजिक सुधार करने के प्रयास किए।

भारतीय इतिहास का गौरव गान

- भारतीय इतिहास का गौरव गान कई नाटकों, कहानियों, उपन्यासों व काव्यों के जरिए किया गया।

- जयशंकर प्रसाद व 'निराला' की ऐतिहासिक कहानियों, नाटकों व कविताओं में इस भावना का स्पष्ट उल्लेख है।
- 19वीं सदी व 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में नालंदा, अजंता व हड़प्पा जैसे स्थलों की खोज की गई, जिसने भारतीय इतिहास की ऐतिहासिकता को साबित किया। साथ ही प्राचीन यात्रियों के विवरणों की मदद से भी गौरवमयी इतिहास को सिद्धि मिली।
- भारतीय इतिहास का प्राचीन काल अपने वैभव के लिए प्रसिद्ध था, ऐसे में इसकी खोज ने एक तरफ जहां राष्ट्रवाद का विकास किया, वहीं दूसरे तरफ हिन्दी साहित्य के कथाओं, उपन्यासों, नाटकों व काव्यों के लिए ढेरों चरित्र व कथानक उपलब्ध करा दिए।
- 19वीं व 20वीं सदी के दौरान बांग्ला का सर्वाधिक विकास हुआ। इसका प्रभाव हिंदी पर भी हुआ। वस्तुत: बांग्ला साहित्यों के हिन्दी रूपांतरण व बांग्ला साहित्य से प्रेरित होकर मौलिक हिन्दी साहित्यों की रचना की गई।
- ऐतिहासिक कथानक को आधार बनाकर लिखी गई रचनाओं के माध्यम से भारतीय अतीत के स्वर्णिम होने तथा उसके खोये गौरव को पुन: प्राप्त करने का प्रयास किया गया।

प्राचीन कथाओं व पुराकथाओं पर साहित्य

- इस दौर में प्राचीन कथाओं के आधार पर साहित्य की रचना एक लोकप्रिय कार्य बन गया।
- इस तरह के साहित्यिक रचनाओं से अंग्रेजों के खिलाफ अप्रत्यक्षत: वार किया गया।
- राम-रावण, कृष्ण-कंस सहित अन्य दैवीय कहानियों के जरिए अच्छाई की बुराई पर धर्म-अधर्म के संघर्ष में धर्म की जीत आदि विषयों को दर्शाया गया, जो वस्तुत: देशवासियों को विदेशी भाषा के प्रति जन-चेतना को प्रसारित करने में मददगार था।

- मैथिलीशरण गुप्त का 'जयद्रथ-वध' व 'भारत-भारती', निराला की राम की

'शक्ति पूजा', आदि रचनाएं इसी श्रेणी की थी।

- प्राचीन भारत के काव्यों जैसे महाभारत, रामायण, उपनिषद व पुराण आदि में ऐसी कथाओं की भरमार थी जिनके आधार पर सत्य-असत्य के संघर्ष को नवीन मानवता के निर्माण और स्वातंत्र्य कामना को वर्णित किया जा सकता था।
- खास बात यह भी थी कि ऐसी रचना सामान्यत: अंग्रेजी प्रतिबंध से दूर रहते थे।

देश प्रेम की भावना

- प्रसाद की कविताएं 'अरूण यह मधुमय देश हमारा' व 'हिमालय के आंगन में' माखनलाल चतुर्वेदी की 'पुष्प की अभिलाषा' सुभद्रा चौहान की कविता 'वीरों का कैसा हो वसंत' प्रसाद की कहानी 'पुरस्कार' आदि देश के प्रति अनुराग की सघन भावनाओं से युक्त थी, जिससे देशानुराग का विकास हुआ।
- उपरोक्त रचनाओं में अंग्रेजी सत्ता का विरोध तो नहीं किया गया लेकिन स्वदेश से प्रेम, देश के प्रति कर्तव्यभावना, बलिदान की भावना, देश के नवनिर्माण के लिए प्रतिबद्धता आदि भावों का विकास जरूर किया गया।

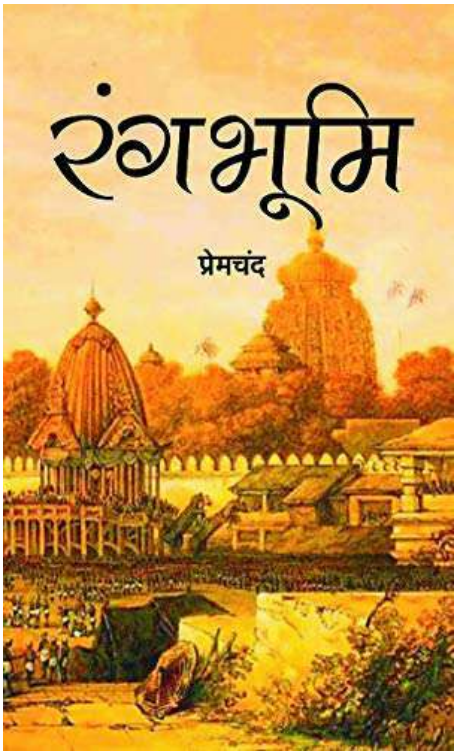

- प्रेमचंद की विख्यात उपन्यास 'रंगभूमि' में अंधे सूरदास का अपनी भूमि से प्रेम की कहानी देश प्रेम का ही एक रूप था।

देश प्रेम की यह भावना समाज के प्रत्येक वर्ग व समाज के प्रत्येक क्षेत्र में विभिन्न स्वरूपों में परिलक्षित हुई।

प्रकृति प्रेम

- प्रकृति प्रेम हमेशा से कवियों के लिए विशेष विषय रहा है।
- द्विवेदी युगीन कवियों के द्वारा प्रकृति का वर्णन प्रमुख था तो छायावादी युग में यह वर्णन और सघन तथा संस्पर्शी हो गया।
- स्वदेश की प्रकृति से प्रेम इन रचनाओं का मुख्य विषय होता था, जो पाठकों के मन में प्रकृति के सजीव रूप का चित्रण करने में सफल होता था जिसके कारण देश व उसके प्रकृति से प्रेम की भावना पाठकों के अंतर्मन में उत्पन्न होती थी।

- रामनरेश त्रिपाठी के दो काव्यखंड 'पथिक' और 'स्वप्न' काफी लोकप्रिय हुए।
- हिमालय की उतुंग चोटियां, गंगा का प्रवाह, विंध्य का वन, सहयाद्रि का विस्तार, मरूभूमि की निर्जनता, सागर की हिल्लोल, विशाल व खूबसूरत पारदर्शी झीलें, अर्थात उत्तरी भारत से लेकर दक्षिणी समुद्र तक और बंगाल की पूर्वी सीमा से लेकर गुजरात तक भारत का समग्र भूगोल इस प्रकृति प्रेम से प्रेरित होकर साहित्य के रूप में व्यक्त हुआ।
- वास्तव में इन प्रकार की रचनाओं ने पाठकों के हृदय में मातृभूमि का एक साकार, मनोरम व वैभवशाली छवि को अंकित कर दिया जिससे शिक्षित वर्ग में मातृभूमि के नये आयाम की रचना हुई।
- भारत की प्रकृति साहित्य का साथ पाकर भारत के जनजीवन का और देश के सौंदर्य का यथार्थ चित्र बन गई जिसने नि:संदेह भारतीय आजादी आंदोलन में योगदान दिया।

मानवता से प्रेम

- मानवता से प्रेम विषय ने वस्तुत: भारत को विश्व के सभी मानवों से प्रेम का रिश्ता स्थापित करने में मदद किया।
- भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वयं को भारत की स्वतंत्रता तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि इसे मानव प्रेम व विश्व प्रेम का आधार दिया।
- गांधी, नेहरू, तिलक, अरविंद जैसे सैकड़ों आजादी के लेखकों का लेखन सदियों तक यह साक्ष्य देता रहेगा कि भारतीय आजादी की लड़ाई दुनिया भर के देशों के लिए मुक्ति का प्रेरक बनी।

- स्वतंत्रता संग्राम के इस महान विचार से हिन्दी साहित्य का मानवता का स्वरूप निर्धारित हुआ, जिससे हिन्दी केवल देश प्रेम की चेतना या साहित्य तक सीमित न रहकर विश्व प्रेम व मानवतावाद के उद्गायन का साहित्य बना।

व्यक्ति स्वतंत्रता का स्वर

- 1757 के प्लासी की लड़ाई के बाद से ही अंग्रेजों द्वारा भारतीय शोषित होने लगे। धीरे-धीरे अंग्रेजों ने पूरे भारत पर कब्जा कर लिया तथा भारतीय मानव के जीवन में इतना ज्यादा परिवर्तन कर दिया कि भारतीय मौलिकता का क्षय होने लगा।

- जब हिंदी साहित्य के विकास को गति मिली तो उपरोक्त परिस्थितियों का इस पर प्रभाव पड़ा लेकिन विपरीत परिस्थितियों ने हिंदी को बदल नहीं दिया बल्कि हिन्दी साहित्य ने शिक्षित युवा वर्ग के मन में नवजीवन की आकांक्षाएं पैदा की, जिससे वैक्तिकता और व्यक्ति स्वातंत्र्य के साहित्य का जन्म हुआ।
- यह उस दौर का साहित्य जो अपने नवनिर्माण की आरंभिक स्थिति में था, उसमें सामंती-व्यवस्था की जकड़न से मुक्त होने की कामना थी।
- यह उस हृदय की भावना का साहित्य था जो स्त्री-पुरूष समता, स्त्री- स्वतंत्रता और मानव प्रेम की कल्पनाओं से आपूरित था।

सुमित्रानंदन पंत

- पंत का काव्य जहां एक और इन आधुनिक अनुभूतियों का कोमलतम् स्वप्नजीवी रूप रच रहा था वहीं निराला के काव्य में इसकी वेदना और दु:ख पुकार रहे थे।
- प्रसाद के आंसू में वैयक्तिकता का गहन रूप रचा गया तो महादेवी की कविता ने स्वतंत्रता और समता की सभी आकांक्षा को प्रमाणिक स्वर दिया।
- जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेव, प्रेमचंद, पंत, माखनलाल चतुर्वेदी, अज्ञेय, यशपाल, दिनकर, हरिवंश राय बच्चन और नरेन्द्र शर्मा आदि के साहित्यों में जहां एक ओर राजनीतिक स्वतंत्रता का स्वर था तो दूसरी ओर इस स्वतंत्रता को परिभाषित और व्याख्यायित करने वाले जीवन के विस्तृत और गहरे चित्र थे।

समाजवाद

- व्यक्तिगत स्वातंत्र्य का प्रत्यक्ष संबंध समाजवाद के विकसित होने से है। अत: वैयक्तिकता के स्वातंत्र्य ने समाजवाद की भावना को बल दिया।
- समाजवाद का विचार भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में धीरे-धीरे विकसित हुआ।

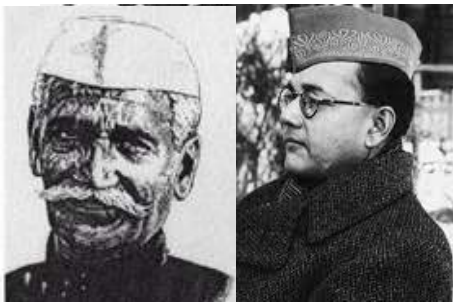

- बोस व आचार्य नरेन्द्र देव आदि नेताओं ने समाजवाद को आजाद भारत के स्वप्न में शामिल किया।
- शुरूआती क्रांतिकारी संगठन के सैकड़ों सदस्य ने देश को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया, परंतु जब नयी पीढ़ी के क्रांतिकारियों के द्वारा संगठन की रचना हुई तो इनके दिमाग में एक प्रश्न हमेशा आती रही कि आजादी के बाद भारत का स्वरूप कैसा होगा ।

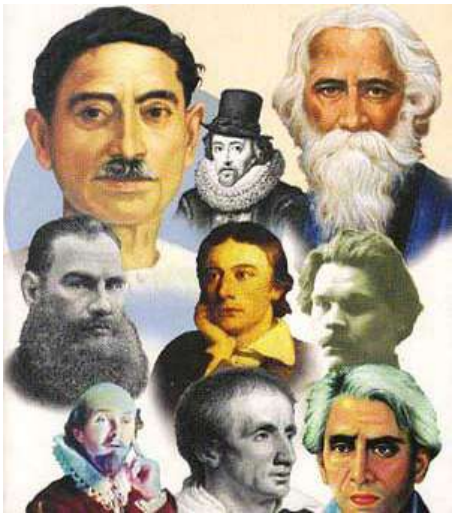

- भगत सिंह, आजाद व भगवती चरण बोहरा जैसे नए पीढ़ी के युवादल ने काफी मंथन के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि आजादी के बाद भारत में समाजवाद स्था. पित करना इनका लक्ष्य होगा, इसी उद्देश्य से इन्होनें अपने संगठन का नाम हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक संगठन रखा।

निष्कर्ष

- उपरोक्त सभी तथ्यों पर हिन्दी साहित्य का असर हुआ और हिन्दी साहित्य को भी इन सभी तथ्यों ने प्रभावित किया। छायावाद की वैयक्तिकता समाजवाद के स्वप्न के रूप में बदलकर हिन्दी साहित्य का विकास प्रगतिशील साहित्य के रूप में हुआ। वास्तव में राष्ट्रीय आंदोलन की चेतना में 20वीं सदी के आरंभिक 50 वर्षों में जो परिवर्तन हुए, उन परिवर्तनों का स्त्रोत समाज और इतिहास की गति थी, हिन्दी साहित्य इसी गति आकांक्षा और स्वप्न का शब्दरूप था।

12. पूर्वोत्तर भारत के आजादी के तराने

- भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में आक्रमणकारियों के साथ यन्दाबी की संधि के बाद क्षेत्र पर अंग्रेजों द्वारा कब्जा जमाने की मंशा का ज्ञान होते ही स्वतंत्रता आन्दोलन आरंभ हो गया । 1817, 1819 व 1821 में तीन बार बर्मी लड़ाकों द्वारा हमला कर असम और मणिपुर के स्वतंत्र क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया गया । बर्मी सेनाओं को वहां से निकालने का वादा कर अंग्रेज स्वयं इन क्षेत्र में कब्जा कर बैठे । वास्तव में इस क्षेत्र के चाय व पेट्रोलियम के लोभ ने अंग्रेजों को इस क्षेत्र में कब्जा बनाए रखने के लिए प्रेरित किया ।
- तत्कालीन दौर में पहाड़ों व जंगलों से घिरे इस क्षेत्र में साक्षरता दर बेहद कम थी और सामाजिक संदेशों के आदान-प्रदान करने का एकमात्र साधन मौखिक शब्द या साहित्य ही था। वास्तव में मौखिक साहित्य ही वर्तमान दौर में तत्कालीन परिस्थितियों को जानने का मार्ग प्रशस्त करती है। इन साहित्यों में उस दौर में आजादी के लिए हुए संघर्ष और क्षेत्रीय लोगों की वीरता का भी वर्णन है।
- विभिन्न शैली के लोकगीत सूचनाओं को दूर दराज तक फैलाते हैं तथा स्वतंत्रता प्रेमी व देशभक्त लोग इनके वीरतापूर्ण व बलिदान के किस्सों से जुड़ जाते हैं। इन गीतों की रचना व गाने वाले लोगों के दुनिया से चले जाने के बाद कई गीत व कविताएं लुप्त हो जाती हैं परन्तु उनमें से कुछ को गिने-चुने साहित्य प्रेमियों ने एकत्र कर संरक्षित कर लिया है।

अंग्रेजों का पूर्वोत्तर क्षेत्र पर कब्जा

- 1826 में बर्मी लड़ाकों के साथ अंग्रेजों की हुई संधि के आधार पर अंग्रेजों ने अजय व मणिपुर के क्षेत्रों पर अतिक्रमण शुरू किया ।

- 1817,1819 व 1821 के दौरान बर्मी लड़ाकों द्वारा उपरोक्त दोनो स्वतंत्र क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया गया था।
- बर्मी लड़ाकों को भगाकर क्षेत्र को मुक्त कराने के प्रलोभन के साथ ब्रिटिश ने इस क्षेत्र मे प्रवेश करना शुरू कर दिया।
- मजबूत व अत्याधुनिक सैन्य शक्ति के दम पर क्षेत्र में अंग्रेजों का वर्चस्व बढ़ता गया ।
- क्षेत्र में चाय व पेट्रोलियम के भंडार ने अंग्रेजों का इस क्षेत्र के प्रति ध्यानाकर्षित किया तथा इस क्षेत्र पर वर्चस्व बनाये रखने के लिए प्रेरित किया ।

असम में विद्रोह

- असम का पहला विद्रोह जिसे 'अहोम विद्रोह' भी कहा जाता है, गोमधर कंवर के नेतृत्व में हुआ।

कर बंगाल की जेल में डाल दिया गया , जहां उनकी मृत्यु हो गई।

- 1830 के दौरान हुए एक अन्य विद्रोह का नेतृत्व पियोली फुकन और जियुराम दुलिया बरूआ द्वारा किया गया।
- दमन के दौरान उपरोक्त दोनों नेताओं को गिरफ्तार कर फांसी दे दिया गया।
- 1857 के दौरान, इस क्षेत्र में विद्रोह का नेतृत्व मणिराम दीवान ने किया, जिन्हें फरवरी 1858 में फांसी पर लटका दिया गया
- 1861 में मध्य असम के नगांव जिले में कृषक विद्रोह हुआ इस पृथक विद्रोह के दौरान पुलिस गोलाबारी में अनेक लोग मारे गए

लोक गीतों का प्रसार

- 1830 के दौरान पियोली फुकन व जियुराम बरूआ के द्वारा विद्रोह किए जाने व शहीद होने के बाद से ही लोकगीतों का क्षेत्र स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गया ।
- लोकगीतों के माध्यम से दोनो की वीरता व बलिदान का प्रचार-प्रसार दूर - दूर के क्षेत्रों तक हुआ ।

- 1857 के दौरान इस क्षेत्र के महानतम नायक मणिराम दीवान की चर्चा आजादी से जुड़े लगभग प्रत्येक लोक गीत में हुई।
- लोकगीतों का असर ऐसा हुआ की स्वतंत्रता आंदोलन के गुजरते दौर के साथ मणिराम दीवान का नाता गहरा होता गया।
- एक बीहू गीत मे मणिराम को बीहू जैसा ही प्रिय बताया गया है जबकी एक अन्य गीत में उनके राष्ट्रभक्ति के कार्यों, चाय उद्योग में इनके योगदान, अंग्रेजों को बाहर करने की इनकी नीति व शहादत का

वर्णन किया गया है।

- उपरोक्त गाथा गीत को 'मणिराम हीवनार मलिता' नाम दिया गया है।
- 1861 के कृषक विद्रोह के दौरान लोकगीतों का प्रसार तेजी से हुआ ।
- अंडमान जेल से सजा काट कर लौटे बहु कैवर्त नामक किसान की चर्चा कई लोकगीतों व रचनाओं मे हुई।
- 25 जनवरी 1861 की घटना, जिसमें पुलिस गोलाबारी में सौ से ज्यादा किसान मारे गए, का उल्लेख भी कई स्थानीय गीतों में हुआ है।
- उपरोक्त गीत (डोली पुराण) की रचना इस घटना के चश्मदीद गवाह नरोत्तम दास द्वारा की गई तथा इस गाथा की रचना पुराण की शैली में की गई है।
- 'डोली' का तात्पर्य मिट्टी के सूखे ढेलों से है, जिसका प्रयोग स्थानीय लोगों ने हथियार के रूप मे किया था।
- स्वतंत्रता मिलने के वर्षों बाद आज भी यह गीत असम का महत्वपूर्ण गाथा गीत है।

20वीं सदी में असम में साहित्य

- 20वीं सदी में असम में साहित्यिक गतिविधियों का श्रेय स्वतंत्रता संघर्ष को दिया जाता है।

- सबसे पहला गीत वर्ष 1916 मे अम्बिका गिरीराय चौधरी, जिन्हें 'असम केसरी' कहा जाता है, के द्वारा रिकार्ड किया गया था।
- इस गीत की रचना असम प्रांतीय सभा के वार्षिक सम्मेलन में उद्देश्य गीत के रूप में की गई थी । इस गीत के द्वारा कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि हम सभी लोग अपने देश के लिए ही जीते हैं और हम सभी का जीवन भारत के लिए ही है।
- 1917 में रायचौधरी ने 'अगिवीणा की धुन' शीर्षक नामक गीत गाया था, जिसमें वह कहते हैं- 'यह उल्लास, आनंद और आराम का गीत नहीं है यह अग्नि वीणा की धुन है, जिसने जीवन और मृत्यु को एक बना दिया है।'
- समूचे असम में रायचौधरी के गीतों का ऐसा प्रभाव हुआ कि 1929 में क्रांतीकारी कथ्य के कारण इनकी पुस्तक 'शताध' को जब्त कर लिया गया ।
- 1926 के कांग्रेस के सत्र का आगाज रायचौधरी के द्वारा संगीतबद्ध ''हम आपका कैसे स्वागत करें, मानवीयता के प्रखर अवतार'' (अनुवादित) गीत के साथ हुआ था।
- 1920-40 के दौरान स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में असम में अनेक गीतों व कविताओं की रचना हुई।
- इस दौरान रायचौधरी, नवीन चंद्र बारदोलाई, उमेशचंद्र चौधरी, परबती प्रसाद बरूआ, नालिनी बाला देवी, प्रसन्नलाल चौधरी, पद्माधर छलिहा, गणेश गोगोई, शंकर बरूआ, आंनदीराम दास और ज्योति प्रसाद अगरवाला जैसे रचनाकारों ने कई रचनाओं को आकार दिया ।

- इनमें से ज्योति प्रसाद अगरवाला क्रांतिकारी विचारों वाले कवि थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं से असम के लाखों लोगों के दिलों में तूफान पैदा कर दिया था।
- ज्योति प्रसाद एक गीतकार, कवि, गायक, संगीतकार, नाटक और अग्रणी असमिया फिल्मकार थे, इन्हें आधुनिक असमिया संस्कृति का जनक कहा जाता है।
- यह स्वतंत्रता आंदोलन के उग्र नेता थे, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कांग्रेसी स्वयं सेवकों की कमान संभाली थी ।
- इन्होंने अपने जीवन काल में 400 गीतों की रचना की, जिसमें से 40 सीधे तौर पर स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित थे ।
- जीवकांत गोगोई के 'स्वतंत्रता संग्रामार गीत' तथा निर्मल प्रभा बारदोलोई के 'स्वाधीनता संग्रामार असमिया गीतरूकतिवा' में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान असम में गाए जाने वाले 200 से अधिक गीत व कविताऐं संकलित हैं।
- 'असमिया बिया' (विवाह गीत) में की गई कई बार स्वतंत्रता आंदोलन का उल्लेख किया गया है, जिसमें गांधी, सरोजनी नायडू, तिलक, नेहरू आदि नेताओं की चर्चा है।
- आजादी के अवसर पर भूपेन हजारिका ने भी एक विशेष गीत लिखा था, जिसका अनुवादित रूप कुछ इस प्रकार है- 'भारत के आकाश में मुस्काए, आजादी के सुबह का प्रतीक, चमत्कार आजादी, उज्ज्वल आजादी' ।
- साहित्य के अन्य विधाओं में ज्योति प्रसाद का एक नाटक 'लभिता' काफी लोकप्रिय हुआ, जिसमें एक युवती की बलिदान का चरित्र चित्रण है।
- खोंमजोम लड़ाई के चश्मदीद गवाह द्वारा रचित एक पारंपरिक गाथा गीत का विषय देशभक्ति की भावना को प्रबल रूप देने वाली है ।
- 1891 में हुई इस लड़ाई में कई मणिपुरियों ने अंग्रेजों से संघर्ष के दौरान अपना बलिदान दिया, इसी याद में यहां खोंमजोम पर्व मनाया जाता है।

निष्कर्ष

- मौखिक गीतों और लोकगीतों सहित कई गीतों व कविताओं का संग्रहण खुद रचनाकार द्वारा भी नहीं किया गया, जिसके पीछे कई प्रकार की परिस्थितियां जिम्मेदार थी । उचित संरक्षण व संग्रहण न हो पाने के कारण कई कालजयी रचना हमारे पास उपलब्ध ही नहीं है, लेकिन कुछ रचनाएं जो प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा एकत्रित किया जा सका , उसकी महत्ता व लोकप्रियता को बनाए रखना हमारा नैतिक दायित्व है और हमारे लिए इसका पाठन ज्ञानवर्धक, देश प्रेम जगाने वाला व विभिन्न विपरीत परिस्थितियों मे भी धैर्यवान बने रहने की सीख देने वाला है।

- विभाजन का दंश सिर्फ भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों ने ही नहीं झेला, बल्कि दुनिया भर में ये कई जगह ऐसा देखने को मिला, जैसे:-
  - इजराइल- फिलिस्तीन विभाजन
  - इंग्लैंड- आयरलैंड विभाजन
  - जर्मनी का विभाजन
  - पूर्वी युगोस्लाविया का विभाजन
  - कोरिया का विभाजन
  - वियतनाम का विभाजन
- प्रत्येक मामले में विभाजन ने दोनों पक्षों के लोगों के लिए गंभीर समस्याएं उत्पन्न की और लंबे समय तक मानवीय जीवन को अस्थिर बनाकर रखा। इन मानवीय कष्टों को साहित्यिक रूप देकर इसे सहेजकर रखा गया है।

भारत के संदर्भ में

- भारत का विभाजन वस्तुत: 3 बार 1905, 1947 और 1971 में हुआ।
- भारतीय विभाजन ने दक्षिण-एशिया का वर्तमान प्रदान किया।
- उर्दू, पंजाबी, हिंदी, बांग्ला, सिंधी व अन्य कई भाषाओं में साहित्यिक रचनायें हुई।

- इसमें विभाजन के दौरान उत्पन्न हुई भीषण विभीषिका का वर्णन है।
- दंगा-लूट, हत्याएं, बलात्कार, मनोवैज्ञानिक आघात की पीड़ा जैसी घटनाएं विभाजन के दौरान घटित हुई।

13. विभाजन साहित्य

- भारतीय साहित्य की बहुभाषी व्यवस्था हमारे देश और सीमांत के बहुआयामी इतिहास को समायोजित करने में मददगार है। स्वतंत्र भारत के उदय ने भारतीय लेखकों व साहित्यों को कई तरीके से प्रेरित किया। भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन का पीढ़ियों पर विनाशकारी व व्यापक प्रभाव पड़ा है। वास्तव में विभाजन कई भारतीय भाषाओं की साहित्यिक विधाओं को बदल कर रख दिया । विभाजन पर आधारित साहित्य को सर्वनाश साहित्य, शरणार्थी साहित्य व बदलाव के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

विश्व के अन्य क्षेत्र के विभाजन आधारित साहित्य

लेखक	किताब	क्षेत्र/संबंध
• घासन कानाफसी	मैन इन द सन	फिलीस्तीन-इजराइल, 1962
• एंटोन शमास	अरै बैस्क्यूस	फिलीस्तीन-इजराइल, 1968
• ए.वीं येदोशुआ	द लवर	फिलीस्तीन-इजराइल, 1997
• सलमान रूशदी	द मिडनाइट चिल्ड्रेन	भारत का विभाजन, 1980
• सीमन डीन	रीडिंग इन द डार्क	आयरलैण्ड विभाजन, 1996
• किम बोनिल	स्पिरिट ऑफ डार्कनेस	कोरियाई विभाजन, 1973
• पाक वानसो	द नेकेड ट्री	कोरियन विभाजन, 1970
• ओज शेलाच	पिकनिक ग्राउंड्स	इजरायल, 2003
• अख्तरूजमान इलियास	द सोल्जर इन द एटिक	बंग्लादेश विभाजन, 1987
• अख्तरूजमान इलियास	द सागा ऑफ ड्रीम्स	बंग्लादेश विभाजन, 1996
• देब्रावाका उग्रेसिक	द म्यूजियम ऑफ अन कंडीशनल सरेंडर	यूगोस्लाविया, 1998
• देब्रावाका उग्रेसिक	द मिनिस्ट्री ऑफ पेन	यूगोस्लाविया, 2004
• गीतांजली श्री	टूम ऑफ सैन्ड	भारत विभाजन, 2018

विभाजन से संबंधित आंकड़े

- विभिन्न समुदायों की 75,000 से अधिक महिलाओं के साथ बलात्कार
- हजारों का अपहरण व कई लापता
- नए रिपोर्ट के अनुसार 14.5 मिलियन लोग विस्थापित

- 3.5 मिलियन लोग लापता
- 1947 व 1971 का विभाजन का वर्णन 'जटिल मानवीय त्रासदी' के रूप में
- 1946 की ग्रेट कलकत्ता किलिंग से लेकर नोआखली, पंजाब, अमृतसर, लाहौर जैसे क्षेत्रों में अनियंत्रित दंगे व मार-काट की घटनाएं।
- विभाजन के त्रासदी को कई साहित्य लेखकों ने अपने भावनाओं से उकेरा है। इन साहित्य लेखों में यात्रा वृतांत, लघु कथा, नाटक, उपन्यास व कविताएं शामिल हैं। वैसे तो हजारों कृतियाँ भारत के विभाजन की त्रासदी पर लिखी गई, जिनमें से कुछ लघुकथाओं व उपन्यासों के बारे में जानकारी निम्न है -:

लेखक	रचनाएं
सआदत हसन मंटो	ठंडा गोश्त, टोल टेक सिंह, खोल दो, डॉग ऑफ टहवाल
कृष्ण चंदर	पेशावर एक्सप्रेस
कर्रतुलन हैदर रजा	आग का दरिया, 1959
यशपाल	झूठा सच, 1958
नसीम हिजाजी	खाक और खून
राही मासूम रजा	आधा गांव
मनोहर मांगनोकर	ए बेंड इन द गंगा, 1964
रजिया भट्ट	बानो
इंतिजार हुसैन	बस्ती, 1979
अमृता प्रीतम	पिंजर, 1950
भीष्म सहनी	तमस, 1987
के. एस. दुग्गल	यां प्यो लई, 1974
खुशवंत सिंह	ट्रेन टू पाकिस्तान, 1990
कमलेश्वर	कितने पाकिस्तान, 2000
कृष्णा सोबती	ए गुजरात हेयर, ए गुजरात देयर, 2017
ऋत्विक घटक	मेघे ढाका तारा, कोमल गांधार, सुवर्णलता
नेमाई घोष	चेन्नामूल
नरेंद्रनाथ मित्रा	पलांको, चेनामहल
बप्सी सिंधवा	आइस कैंडी मेन, 1989
अमिताभ घोष	द शैडो लाइन्स, 1988
झुम्पा लाहिड़ी	इंटर प्रेटर ऑफ मेलोडिज, 1999
सोना सिंह बाल्डविन	व्हाइट बॉडी रिम्बेम्बर्स, 2001
रोहिंगटन मिस्त्री	ए फाइन, बैलेंस, 2001

इतिहास संग्रह और पहल

- 1950 के दशक से भारतीय विभाजन लेखन अच्छी तरीके से विकसित हुआ। पहले के 5 दशकों में यह उच्च राजनीति को समर्पित था लेकिन धीरे-धीरे नारीवादी विचारधारा, उत्तरजीवी के आख्यान व जाति के दृष्टिकोण पर आधारित होता गया।

तर्क वितर्क से संबंधित साहित्यिक रचनाएँ-:

लेखक	रचनाएं
बी. आर अम्बेडकर	पाकिस्तान या भारत का विभाजन (1945)
डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी	अवेक हिन्दुस्तान (1945)
लैरी कोलिंस और डोमिनिक लैपिएरे	फ्रीडम एट मिडनाइट (1975)
अबुल कलाम आजाद	इंडिया विन्स फ्रीडम
रफीक जकारिया	हू डिवाइडेड इंडिया
राजेन्द्र प्रसाद	इंडिया डिवाइडेड
हिरणमय बंदोपाध्याय	उदबस्तु

- स्वतंत्रता के 50 वर्षों के बाद, विभाजन की त्रासदी व प्रभाव के अध्ययन के लिए एक नए दृष्टिकोण को अपनाया गया, जिसमें कुछ नारीवादी साहित्यों के कृतियों का प्रमुख योगदान है।

लेखक	रचनाएं
उरबासी बुटालिया	द अदर साइड ऑफ वायलेंस - वॉयस फ्रॉम द पार्टिशन ऑफ इंडिया
रितु मेनन व कमला भसीन	बॉर्डर एंड बाउन्डरीज
जशेधरा बागची	ट्रॉमा एंड ट्रिंफ
वीना दास	मिरर ऑफ वायलेंस
जया चटर्जी	बंगाल डिवाइडेड, स्पॉयल्स ऑफ पार्टीशन
अनम जकेरिया	द फुट प्रिंट ऑफ पार्टिशन
यास्मीन खान	द ग्रेट पार्टिशन
जहाँ आरा कबीर	पोस्ट पार्टिशन एनमेसिया
आंचल मल्होत्रा	रैमनेट्स ऑफ सेपरेशन
भास्तानी घोष	विक्ट्रीकॉलोनी 1950
पिप्पा वर्डी	एशेज ऑफ 1947
अंजनि एनजेटी	पोर्टेड अर्थ (2021)
निसिड हाजरी	मिडनाइट्स फ्यूरीज (2015)

निष्कर्ष

- पिछले कुछ दशकों में, विभाजन साहित्य ने दुनिया में पाठकों को आकर्षित किया है। वास्तव में विभिन्न परिस्थितियों, विचारधाराओं व राजनीतिक प्रेरणाओं से संबंधित होने के कारण इन साहित्यिक ग्रंथों का पुनः अध्ययन करने की जरूरत है।

- विभाजन से संबंधित महिलाओं में उर्दू व हिंदी के पर्याप्त साहित्य उपलब्ध हैं लेकिन बांग्ला व कई अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्यों का हिंदी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद न हो पाने से राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी उपलब्धता सीमित है। वर्तमान समय में विभिन्न एजेंसियों व प्रकाशन की सुविधाओं के होने से विभाजन पर लिखे गए साहित्य काफी लोकप्रिय हो रहे हैं।
- ये विभाजन साहित्य अपने अंतः स्थल में बहुत सारे तथ्यों, भावनाओं व आंकड़ों को सहेजे हुए है, साथ ही ऐतिहासिक रूप से तो ये महत्वपूर्ण है ही, ऐसे में देश जब विभाजन के साथ-साथ आजादी का 75वां वर्षगांठ मना रहा है, तो इन साहित्यों का पुर्नपाठ होना चाहिए, जिससे भारतीय उपमहाद्वीप में नई विचारों का प्रतिपादन हो सके।

Notes

Dhyeya IAS Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.com/hindi

ध्येय IAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 9205274741, 9205274742, 9205274744